हिंदी साहित्य निकेतन, बि

जो तुम पास हमारे होते

डा. दिनेश गोस्वामी

आभार

कालजयी प्रख्यात शायर, कवि एवं वरिष्ठतम साहित्यकार श्रद्धेय निश्तर ख़ानक़ाही जी का स्नेहिल शुभाशीष एवं अनुपमेय-अमूल्य मार्गदर्शन मुझे सहज ही उपलब्ध हो गया। मैं इसे अपने संचित पुण्यकर्मों का प्रतिफलन मानता हूँ। ऐसे महान प्रज्ञापुरुष का अवलंबन एवं सान्निध्य सौभाग्य से ही प्राप्त होता है।

श्रद्धेय ख़ानक़ाही जी के के सामीप्य से ज्ञानगंगा के अवगाहन का जो सुख मुझे मिला, उसकी अनुभूतियों को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञानालोक जीवन की अमूल्य निधि है, इसे सहेज कर रखूँगा।

उनके लिए 'आभार' शब्द मेरे मनभावों को पूरी तरह प्रतिबिंबित नही करता। मैं तो उनका ऋणी हूँ। मेरी प्रार्थना है कि उनके वरद्हस्त की छत्रछाया मुझ पर सदैव बनी रहे।

यह काव्यांजलि वरिष्ठ साहित्यकार, कवि आदरणीय अग्रज डा.गिरिराजशरण अग्रवाल जी (अध्यक्ष हिंदी विभाग, वर्धमान कालेज, बिजनौर) के अथक् श्रम तथा सद्प्रयास की परिणति है। उन्होंने काव्य के अनेक तथ्यों से मुझे परिचित कराया। उनके सद्प्रयास और सत्परामर्श के कारण ही मेरी रचनाएँ संकलन का मूर्तरूप ले सकीं। मैं उनके प्रति नतमस्तक हूँ।

विख्यात एवं लब्धप्रतिष्ठ शायर, बड़े भाई श्री महेंद्र 'अश्क' नजीबाबादी ने समय-समय पर प्रमाद के क्षणों में मेरा उत्साहवर्धन किया, उनके प्रोत्साहन के संबल का योगदान भी इस गीतिकाव्य-प्रकाशन का आधार है। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, परम स्नेही, मेरे शुभचिंतक प्रसिद्ध बालरोग विशेषज्ञ एवं कवि डा. अजय जनमेजय की प्रेरणा मेरी रचनाधर्मिता को निरतर बल प्रदान करती रही है। मैं उनका अनुगृहीत हूँ।

श्री रामबहादुर वर्मा, प्रवक्ता एम.एम. इंटर कालेज, नगीना व नवोदित कवि नागेंद्र मधुकर का सक्रिय सहयोग मुझे सदैव मिला है, उनका निस्वार्थ सेवाभाव मेरा संबल है। मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

नगीना (बिजनौर) — डा. दिनेश गोस्वामी

गीत, भाव और अनुभूति

वह पहला दिन!

जब डा.दिनेश गोस्वामी अपने लयबद्ध स्वर में मुझे अपना कोई गीत सुना रहे थे तो बीच-बीच में, मैं यह महसूस कर रहा था जैसे एक तरफ़ तो मेरा ध्यान उनके गीत की शब्द-व्यवस्था और उस शब्द-व्यवस्था के माध्यम से व्यक्त की गई विषयवस्तु की ओर है और दूसरी तरफ़ मेरा मस्तिष्क कुछ ऐसे मौलिक सवालों से जूझ रहा है, जो गीत की विधा के आधुनिक संदर्भ से जुड़े हैं।

गीत समाप्त हुआ तो ये सवाल और ज़्यादा उभरकर, निखरकर मेरे सामने आए। उदाहरण के तौर पर मैंने यह सोचा कि गीत की परंपरागत शैली में समय एवं तीव्रता के साथ बदलते हुए मनुष्य के व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन के अनुसार किसी विशेष बदलाव की आवश्यकता तो नहीं, यदि यह आवश्यकता है तो किस प्रकार की और किस सीमा तक? क्या गीत का परंपरागत ढाँचा किसी बड़े परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए तैयार होगा? यह परिवर्तन अभिव्यक्ति के स्तर पर हो या विषयवस्तु के स्तर पर? मेरे सामने एक सवाल यह भी आया कि गीत की जो परंपरागत शैली है, क्या वह आज के आदमी के जीवन और उसकी भावनाओं का साथ देने के लिए अब भी उतनी ही कारगर है, जितनी कभी पहले रही होगी?

अब सोचता हूँ तो मेरे मन में ये सारे सवाल सिर्फ़ इस कारण उत्पन्न हुए कि जीवन से जुड़े हर पहलू को, चाहे वे आम उपभोक्ता वस्तुओं के साथ जुड़े हो अथवा कला और साहित्य के साथ, हम अपने विचार में कृत्रिम रूप से आधुनिक बनने की होड़ में शामिल हो गए हैं। इस प्रयास में हम अक्सर इस वास्तविकता को भूल जाते हैं कि परिवर्तन जीवन के चाहे किसी भी क्षेत्र में हो, वह अनायास ऊपर से या आकाश से नहीं टपकता, परंपरा के गर्भ से ही निकलकर विकसित होता है। साथ ही परिवर्तन की प्रक्रिया किसी ढाँचे की

मौलिक रूपरेखा को उतना नही बदलती जितना उसके प्रयोगात्मक पहलू को या उस ढाँचे के प्रति रचनाकार के परंपरागत व्यवहार को बदलती है। यद्यपि ये पंक्तियाँ मैंने साहित्य के संदर्भ में लिखी हैं, किंतु ये जीवन के अन्य पहलुओ के लिए भी उतनी ही सच हैं, जितनी साहित्य के लिए। कोई भी आधुनिक शैली, चाहे वह जीवन की हो या साहित्य की, परंपरा से पूर्णतया कटकर विकसित नहीं हुई। उसकी पृष्ठभूमि में शताब्दियाँ साँस ले रही होती हैं। जहाँ तक गीत का सवाल है, यह अपनी अदायगी या प्रस्तुति अथवा अभिव्यक्ति मे किसी बड़े परिवर्तन को आधुनिकता के नाम पर इसी प्रकार स्वीकार नहीं करता, जिस तरह ग़ज़ल। रचनाकार गीत और ग़ज़ल की विषयवस्तु के साथ तो नए प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं, किंतु वे उनके 'फार्म' को खंडित या परिवर्तित नहीं कर सकते।

निदा फ़ाज़िली जब यह पंक्ति कहता है– 'थाने कचहरी में बरस गया पानी।' तो क्षणभर में महसूस कर लेता है कि यह पंक्ति गीत में और केवल गीत की हो सकती हैं, ग़ज़ल की, मुक्तक की, रूबाई की या किसी और छंदबद्ध कविता की नहीं हो सकती। सवाल यह है कि विषयवस्तु में हुए भारी परिवर्तन के बावजूद यह कैसे ज्ञात हुआ कि यह पंक्ति गीत की पंक्ति है? उत्तर में हम कह सकते हैं कि अपनी अदायगी और प्रस्तुतिकरण के माध्यम से। इस सारी बहस का सार यह है कि गीत को हम न तो आधुनिक कविता की तरह गद्यात्मक बना सकते हैं और न आधुनिकीकरण के नाम पर उसकी विशेष परंपरागत शैली के साथ मनचाही छेड़छाड़ ही कर सकते हैं। विचार के स्तर पर भी जो परिवर्तन होगा, वह इस शर्त के साथ स्वीकार किया जाएगा कि उससे गीत की स्वाभाविक कोमलता घायल न हो।

यह कहना कि मानव-जाति ने अपने सामाजिक विकास का पहला पग गीत-गायन के साथ ही रखा था, अतिशयोक्ति नहीं है। लाखों वर्ष बीत गए, गीत लोकवाणी की अपनी विशेष पहचान नहीं खो पाया है। ध्यानपूर्वक दृष्टि डाले तो महसूस होगा कि जिस जनकाव्य को हम लोकगीतों का नाम देते हैं, वे एक नही अनेक विषयों के साथ जुड़े हैं– शादी-विवाहों के अवसर पर गाए जाने वाले गीत, फ़सलें आने और काटे जाने के अवसरों पर गाए जाने वाले गीत, बदलते हुए मौसमों और बसंत बहार के आगमन पर गए जाने वाले गीत, संतान के जन्म पर सामूहिक रूप से गाए जाने वाले गीत, बेटियों को विवाहोपरांत विदा करते समय के गीत, चरवाहों, माँझियों, शिल्पकारों आदि द्वारा गाए जाने वाले गीत,

प्रेमी जोड़ो द्वारा मिलन और वियोग की भावना को व्यक्त करने के लिए गाए जाने वाले गीत, यौवन एवं काम-संबंधी प्रतिक्रियाओं को मुखर करने के लिए गाए जाने वाले गीत। ये गीत हज़ारों-हज़ारों वर्षों से भारत के विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न बोलियों और भाषाओं में जनसाहित्य के रूप में रचे और सामूहिक रूप मे गाए जाते रहे और अब भी गाए जाते हैं। हज़ारों साल तक न तो इन्हें लिपिबद्ध किया गया और न ही इनका कोई रिकार्ड ही सुरक्षित रखा गया। ये एक पीढी से दूसरी पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी से तीसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से पहुँचते रहे और अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखे रहे।

बहुत समय नहीं बीता है, जब कुछ साहित्यकारों का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में, गाँव-गाँव में बिखरे इन गीतों को एकत्र करके लिपिबद्ध करने का प्रयास किया। फिर भी हज़ारों-लाखों की संख्या में आज भी हर जगह ऐसे लोकगीत सुनने को मिल जाएँगे, जिन्हें अभी तक लिपिबद्ध नही किया गया है।

उक्त चर्चा का एकमात्र उद्‌देश्य यह बताना है कि गीत की विधा लोकजीवन के साथ जितनी गहराई से जुड़ी है, उतनी गहराई से कोई दूसरी विधा नहीं जुड़ी। जितनी प्राचीन यह विधा है, उतनी पुरानी कोई दूसरी विधा नहीं है। यह बात अलग है कि फ़िल्मी गीतों में बढ़ते हुए बेतुकेपन ने गीत की स्वस्थ सस्कृति पर बुरी तरह आक्रमण किया है। उनमें शालीनता कम हुई है, भौंड़ापन आया है।

संक्षेप में हम कहना चाहें तो गीत अपनी अभिव्यक्ति में एक कोमल शालीनता बनाए रखने की माँग करता है। विधागत दृष्टिकोण से वह पूर्णतया छदमुक्त नहीं हो सकता। लयात्मकता ही उसकी आत्मा है।

तर्क देने वाले आसानी से यह तर्क दे सकते हैं कि अच्छे और सुंदर ढग से लिखे गए गद्य में भी एक प्रकार की लयात्मकता होती है, गद्य की पंक्तिया को गीत की भाँति गाया जा सकता है। कई फ़िल्मी गीत पूर्णरूप से गद्यांश हे, लेकिन सिद्धहस्त गायकों ने उन्हें बहुत बढ़िया ढंग से गाया भी है। फिर भी यह अकाट्य सत्य है कि हम कविता को तो चाहे छंदमुक्त कर सकते हैं, कर भी चुके हैं, पर गीत को छंदमुक्त नहीं कर सकते हैं। लयमुक्त तो बिल्कुल ही नही कर सकते। तात्पर्य यह है कि गीत की विधा से हम जो आशा रखते हैं, वह यह है कि गीत की भाषा कोमल हो, वह विचारात्मक कम और भावात्मक ज़्यादा हो। गीत लय से जुड़ा हो, सरल हो, हल्का-फुल्का हो, बोझिल न हो और

गुनगुनाया जा सकता हो उसमे धीरे धीरे बहने वाले दरिया जैसा प्रवाह हो तूफान जैसी तेज़ी न हो। आम जीवन से जुड़ी भावनाएँ हों, जटिल समस्याएं न हो। प्रभावशाली हो, उपदेशात्मक न हो। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण हज़ारों वर्षों की यात्रा में गीत मनुष्य में भावनात्मक पहलू से जुड़ा रहा। गीत ज्ञान नहीं देता, जीवन के छिपे रहस्यों को उद्‌घाटित भी नहीं करता, वह आनंदित करता है, चिंतित नहीं। गीत की यह विशेषता उसकी शैली से भी जुड़ी है और अदायगी के ढंग से भी।

डा. गोस्वामी की विशेषता यही है कि उन्होंने गीत की इस विशेष शैली को अपनी पकड़ से बाहर नहीं जाने दिया है। वे न तो गीत की लयात्मकता के साथ अनुचित छेड़छाड़ ही करते हैं और न उसकी रचनात्मक व्यवस्था के साथ दुर्व्यवहार। वह गीत को गीत ही बना रहने देते हैं, कविता या छंदमुक्त कविता नही बनने देते। उदाहरण के लिए उनके गीतों के कुछ अंश देखिए। 'मोर पंखिया शामें' शीर्षक से लिखे गए अपने गीत में वह कहते हैं–

भीग रही पलको पर उतरीं
हँसती मोर-पंखिया शामें,
अश्रुबिंदु बन झर जाते हैं
बिछुड़न के क्षण, गहन-निशा में,

कितनी दूर चली आई है
गुलमुहरों की छाँव सुहानी,
पियराए-पत्रों पर अंकित
नील झील से टपका पानी,
पागल प्रीति प्रतीक्षा करती
दीप जलाए प्रत्याशा में।

एक और गीत दोहराकर देखिए–

रात का सूना पहर है
सो गए दीपक शहर के,
तुम उनींदी आँख की अँगड़ाइयों का अर्थ समझो।
जग रहा चंदा गगन में
चाँदनी उन्मादनी है,

प्रीति का प्रतिदान दन
आ गई मधुयामिनी है,
तुम मचलती मदभरी पुरवाइयों का अर्थ समझो।
एक मैं हूँ, और तुम हो
शरबती ख़ामोशियाँ हैं,
प्यास से तपते हृदय में
जल रही मदहोशियाँ हैं,
तुम सुलगती, शबनमी तन्हाइयों का अर्थ समझो।

डा. गोस्वामी के जिन दो गीतों के अंश ऊपर दिए गए हैं, उनमें गीत की कोमलता और लयात्मकता पूरी तरह विद्यमान है। इसे प्रमाणित करने के लिए शब्दों का भंडार इकट्ठा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं पाठकों का ध्यान जिस विशेष बिंदु की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, वह है डा. दिनेश गोस्वामी के गीतों की रचनात्मक शब्दावली। शब्दों के रचनात्मक प्रयोग ने उनके गीतों की कोमलता को कुप्रभावित किए बिना, उन्हें गीत जैसा हलका-फुलका तो बनाए ही रखा है, साथ ही अर्थों की दृष्टि से उन्हें और अधिक विस्तृत बना दिया है। ध्यान दें तो पहले गीत में अश्रुओं का बिंदु बनकर झर जाना, आशा का जुगनू की तरह जागते रहना, गुलमुहरी छाँव का दूर चले जाना और इसी प्रकार दूसरे गीत में चाँदनी का उन्मादी होना, चितवन का बिन कहे कुछ कह उठना तथा ख़ामोशियों को शरबती कहकर अभिव्यक्त करना, गीतों में शब्दों का रचनात्मक प्रयोग है। शब्दों का यह रचनात्मक प्रयोग गीत के प्रभाव को बढ़ाता भी है और उन्हें बोझिल भी नहीं होने देता।

भारी-भरकम साहित्यिक आवरण को गीत की कोमलता सहन नहीं कर पाती है। जब कोई गीतकार उस पर साहित्य की मोटी-भारी परत चढ़ाने का प्रयास करता है तो गीत उसके बोझ से इतना दब जाता है कि अपना अस्तित्व ही खो बैठता है। डा. दिनेश गोस्वामी इस रहस्य से भली प्रकार परिचित हैं। वह गीत के साथ शब्दों का रचनात्मक प्रयोग करते हुए भी गीत को गीत की तरह ही हलका-फुलका, कोमल और हृदयस्पर्शी बनाए रखते हैं।

यह सही है कि उनके यहाँ गीतों में विषयों की विविधता नहीं है। अधिकतर गीत मिलन, वियोग, प्रेम आदि प्रसंगों से संबद्ध हैं, किंतु मेरी दृष्टि मे यह कोई आपत्तिजनक बात नहीं है। यह तो मानव-जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। इस पहलू के साथ जुड़े हुए विषय रूखे-सूखे और नीरस तब हो जाते

है जब   अपनी अभिव्यक्ति को नवीनता देने की क्षमता खो बैठता है और पिष्टपेषण का अभ्यास करता रहता है। दिनेश गोस्वामी ऐसा नहीं करते उनकी अभिव्यक्ति में नवीनता और उनकी अदायगी में ताज़ापन है। एक उदाहरण और देखें–

प्रीति के अनुबंध टूटे
रक्त के संबंध छूटे,
सामने चेहरे सभी के
दूर तक सूना गगन है।

गुनगुनाती भोर वह
चौपाल की संध्या सुहानी,
गाँव की कच्ची हवेली
बन गई बीती कहानी,
छाँव पीपल की घनेरी
खोजता अभिशप्त मन है।

मैंने जानबूझकर इस गीत को इस कारण चुना है कि यह दिनेश गोस्वामी के प्रिय विषय प्रेम से ज़रा अलग हटकर है। किंतु पाठक अनुमान लगा सकते है कि विषय के बदलाव से गीत के रस, माधुर्य एवं कोमलता में कोई अंतर नहीं आया है। गोस्वामी गीत को व्यवहार में लाने की कला जानते हैं, यह उनका गुण है।

गीतों के इस संग्रह से पहले भी उनकी कुछ छोटी–छोटी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। समकालीन राजनीतिक विषयों पर भी मैंने उनकी कुछ व्यंग्य- कविताएँ देखी हैं। जब वे कविताएँ मैं देख रहा था तो मुझे लगा था कि कविता मे हास्य–व्यंग्य का कलात्मक प्रयोग भी उनके कवि–स्वभाव का एक जानदार पहलू है। वह अपने इस पहलू को अभी विकसित नहीं कर पाए हैं। यदि गीत–लेखन के साथ–साथ दिनेश गोस्वामी अपनी इस क्षमता से भी काम ले सकें तो हिंदी का व्यंग्य–काव्य एक और अच्छे, आकर्षक स्वर से परिचित हो सकता है।

मुझे आशा है कि दिनेश गोस्वामी के इस गीत–संग्रह का, हिंदी के विशाल पाठकों में भरपूर स्वागत होगा।

चामुंडा रोड, मौ. जाटान,
बिजनौर (उ.प्र.)

निश्तर ख़ानक़ाही

गीत-क्रम

जो तुम साथ हमारे होते	15
पुरवाइयों का अर्थ समझो	16
तृष्णा ही जीवन में	17
सौगंधों के अर्थ खो गए	18
ये बंजारों की बस्ती है	19
जीवन दीपक-सा जलता है	21
हँसती मोर पंखिया शामें	23
कोई आँचल जला धूप से	24
शपथ तुम्हें मेरे आँसू की	25
राही चलता चल	26
तृष्णा और अतृप्त हो गई	27
मेरी गागर रीती-रीती	28
चलो प्रतीक्षा करें चाँद की	29
नई भोर होने वाली है	31
वह कालरात्रि तो आएगी	32
विवश पराजित अभिलाषाएँ	33
दूर तक सूना गगन है	35
प्यासे मेरे होंठ जल गए	36
अनजाना है नदिया का तट	37
मिले न मुझको सच्चे मोती	38
एक भी विश्वास मेरा	39
नयनों में नीर भरे	41
दुनिया का मेला है	42
एक बूँद हूँ	43
सौ जनम चाहिए भूलने के लिए	44
सूनेपन में किसे पुकारूँ	45
एक झलक पाने को	47

सून आकाश को	48
रहे झाँकते खिड़कियों से सितारे	49
सपनों का संसार माँग लूँ	50
लगी नींद आने	51
नाजुक नशीली छुअन	52
छलके अश्रु पिए हैं मैंने	53
सलोनी चितवन	54
किससे रूठूँ किसे मनाऊँ	55
मैं कवि हूँ तुम मेरी कविता	56
धूप-छाँव-सी	57
दूर-दूर तक नयन ढूँढते	58
मैंने रोपे थे चंदन वन	59
पोर-पोर में रजनीगंधा	60
सुधियाँ भूल नहीं पाई हैं	61
अरुण-अरुण अधरों पर अंकित	63
मौन नयनों ने नयन से	65
अनुरंजित अरुणिम कपोल पर	66
नील-झील-से नयन-सरोवर	67
राजहंस मैं प्यासा-प्यासा	68
गाँव तुम्हारे कैसे आऊँ	69
मैं चातक-सी प्यास लिए हूँ	70
जले हृदय में आग	71
जग के रिश्ते	72
तुम मेरे गीतों का स्वर हो	73
रिमझिमी फुहारों का मौसम	74
नयन निमंत्रण	75
पग आहट से	76
सावन का दे दिया निमंत्रण	77
मेरे गीतों में पढ़ लेना	79
जो तुम पास हमारे होते	80

जो तुम साथ हमारे होते

जो तुम साथ हमारे होते, हम क्यों यूँ बंजारे होते

धूप सुलगती आज शीश पर,
हृदय चाँदनी ने झुलसाया,
सूने नयन ढूँढते फिरते
घनी-घनी अलकों की छाया,
रेगिस्तानी चट्टानों पर, बेसुध हो हम सुख से सोते।

आँसू अपने कभी न पीते
सावन-भादों प्यासे-प्यासे,
प्यासी-प्यासी इन चाहों के
स्वप्न न होते धुआँ-धुआँ-से,
नर्म-नर्म भीगी पलकों पर , खिले-खिले उजियारे होते।

अंगूरी उन्मादक चितवन,
अंगों में दहके पलाश वन,
प्रियतम का मोहक संबोधन
रह-रह के इतराता यौवन,
जीवन-भर को मिल जाता तो जीवन से क्यों हारे होते।

आमंत्रित करती अँगड़ाई
बिन बोले हो गई पराई,
हँसने वाली मुस्कानों को
आती है हर समय रुलाई,
काश! कहीं हम दोनों रोते, आँसू कितने प्यारे होते।
जो तुम साथ हमारे होते।

पुरवाइयों का अर्थ समझो

रात का सूना पहर है
सो गए दीपक शहर के
तुम उनीदी आँख की अँगड़ाइयों का अर्थ समझो।

जग रहा चंदा गगन में
चाँदनी उन्मादिनी है,
प्रीति का प्रतिदान देने
आ गई मधुयामिनी है,
तुम मचलती मदभरी पुरवाइयों का अर्थ समझो।

बिन कहे, सब कह रही है
चंचला चितवन तुम्हारी,
अंग आतुर हो उठे हैं
साँस बहकी है हमारी,
तुम बहकती सांस की गहराइयों का अर्थ समझो।

एक मैं हूँ और तुम हो
शरबती खामोशियाँ हैं,
प्यास से तपते हृदय में
जल रही मदहोशियाँ हैं,
तुम सुलगती शबनमी तन्हाइयों का अर्थ समझो

तृष्णा ही जीवन मे

नयनों में निर्झर हैं
सामने सरोवर हैं
किंतु! मन मरुस्थल-सा प्यासा का प्यासा है!
तृष्णा ही जीवन में दुख की परिभाषा है!

मेघ घिरे पलकों पर
बरस-बरस खुल जाते,
सावनी घटाओं से
लौट-लौट फिर आते!
रिमझिमी फुहारों में सुलगी अभिलाषा है!

चाँदनी सितारों के
आस-पास सोती है,
नीर-भरे नयनों में
नींद कहाँ होती है!
रेशमी उजालों में जाग रही आशा है!

दर्द डूब जाते हैं
बूँद-बूँद पानी में,
आँसू ही आँसू हैं
प्रीत की कहानी में!
प्राणों में परिणय की पलती जिज्ञासा है!

दूर तक अँधेरे हैं
सामने उदासी है,
जागते सितारों की
आँख आज प्यासी है!
डूबती दिशाओं में छा रहा कुहासा है!

सौगधो के अर्थ खो गए

सौगंधों के अर्थ खो गए
पल-पल प्यार लुटाने वाले
अर्थहीन संबंध हो गए।

छले हृदय वासंती मौसम
जगी तितलियों की आँखें नम
कली-कली पर बिखरी शबनम
मधुवन को महकाने वाले
सुमन सरस निर्गंध हो गए।

मधुघट रीत गया अंतर का,
मूक हो गया स्वर निर्झर का,
कहीं खो गया गीत भ्रमर का,
जनम-जनम की पीड़ाओं से
प्राणों के अनुबंध हो गए।

राहों में मुसका लेते हैं,
भीगें स्वर में गा लेते हैं,
आँसू को बहला लेते हैं,
अधरों की उन्मुक्त हँसी पर
अब सौ-सौ प्रतिबंध हो गए।

आस अभागिन लगी तड़पने
टूट गए सब सुंदर सपने
अपने भी हो सके न अपने
भुजपाशों से आज अपरिचित
बाहु-वलय के बंध हो गए।

यह बंजारों की बस्ती है

यह बंजारों की बस्ती है
अपना घर कहाँ बसाओगे?
जग-नदिया का रेतीला तट
लहरों में लय हो जाओगे।

मन-पाखी उड़े कपोतों-सा
नीले नभ में उड़ जाता है,
ध्वनि की प्रतिध्वनित तरंगों-सा
फिर वापस भू पर आता है,
भ्रम से झूठे संबंधों को
बोलो, कैसे झुठलाओगे?

झझावातो की आहट से
फूलों के पंख बिखर जाते,
दीपक की ज्योति जलाने में
घनघोर अँधेरे घिर आते,
इन बहकी हुई हवाओं मे
तुम कितने दिए जलाओगे?

संतापों से सुलगे तन-मन
अपनों ने यह अभिशाप दिया,
सुमनों-सा जीवन जीने को
प्राणों ने पल-पल गरल पिया,
इस विष-घट को पीते-पीते
तुम बीते पल हो जाओगे।

सूनापन और अकेलापन
कुछ तेरा है, कुछ मेरा है,
जग को अपना कहने वाले
जग क्षण-सा क्षणिक बसेरा है,
कह रहीं धुएँ की रेखाएँ,
तुम स्वयं धुँआ हो जाओगे।

जीवन दीपक-सा जलता है

प्राणों में पीर पिघलती है,
नयनों में नीर मचलता है।
मन अश्रुकणों-सा निर्मल है,
जीवन दीपक-सा जलता है।

अभिशप्त पराजित श्वासों को
विध्यांचल-से विश्वास दिए,
आहत-अकुलाए अधरों को
मोहक-मधुरिम मधुमास दिए,
मेरा अस्तित्व हिमालय-सा
पी-पीकर आग पिघलता है।

चदन के वन बोए मेने
जगल उग रहे बबूलो क,
पलकों पर रह-रह कर चुभते
सुख-स्वप्न सुगंधित फूलों के,
पतझर आँचल में बँधे हुए
मुझको हर मौसम छलता है।

संकल्प गगन छूने वाले
राहों में पंख-विहीन हुए,
विश्वासों ने डस लिया हमें
नभ के शिखरों को कौन छुए?
चिर व्यग्र-प्रतीक्षित विरहिन-सी
चाहों में पली विकलता है।

विष घूट पिए हँस-हँस मैंने
कोलाहल में, वीरानों में,
वह ज़हर तुम्हें मिल जाएगा
मेरी भीगी मुस्कानों में,
हर जख़्म सुलगता है अब तक
नस-नस में रक्त उबलता है।

मन अश्रुकणों-सा निर्मल है,
जीवन दीपक-सा जलता है।

हँसती मोर पंखिया शामें

भीग रही पलकों पर उतरें हँसती मोर पंखिया शामें,
अश्रुबिंदु बन झर जाते हैं, बिछुड़न के क्षण गहन निशा में।

हरसिंगार झरे आँगन में
जाग रही जुगनू-सी आशा,
चंद्रकिरण की चंचलता को
तरस रहा मन प्यासा-प्यासा,

स्वप्न खो गए अंतरिक्ष में, नींद उड़ गई मुक्त दिशा में।

कितनी दूर चली आई है
गुलमुहरों की छाँव सुहानी,
पियराए पत्रों पर अंकित
नील-झील से टपका पानी,

पागल प्रीति प्रतीक्षा करती दीप जलाए प्रत्याशा में।

पवन सावनी, गंध फागुनी
सूनापन, मधुवंती बातें,
याद उन्हें कर-कर रोती हैं
धुली-धुली पूनम की रातें,

दहक-दहक उठते पलाश वन, सुलगी-सुलगी अभिलाषा में।

कौन बाँध पाया आँचल में
इंद्रधनुष की मोहक छाया,
सकल विश्व को छलती रहती
निठुर समय की निर्मम माया,

जीवन के अवसाद घुल गए मुग्ध प्रणय की मृदु भाषा में।

कोई आँचल जला धूप से

कोई आँचल जला धूप से, कोई झुलसा छाँव मे
सबके साथ अकेलापन है, भीड़-भरे इस गाँव में

भोर जागती अलसाई-सी
नयनों में ले प्रश्न अनाम,
दिन-भर उन्हें टालते रहते
हम अधरों पर धरे विराम,
साँझ-ढले चुभते अँधियारे, अंतरमन के घाव में।

साँस-साँस में, अधर-अधर पर
सौ-सौ लगे प्रबल प्रतिबंध,
मधुर-मधुर रिश्तों से आए
कुटिल-कुटिल कलुषित-सी गंध,
जुड़े हृदय के संबंधों ने, बंधन बाँधे पाँव में।

पनघट प्यासा-प्यासा दीखे
गागर तृषित उदास है,
सावन-भादों की पलकों पर
भीगी-भीगी प्यास है,
मृगछौनों-सा मन यह भटके, तृष्णा के भटकाव में।

सहमी-सहमी साँझ सिसकती
सहमे सुखद सवेरे हैं,
जगमग करते राजमहल में
बसते घने अँधेरे हैं,
डूब गए मुस्काते सपने, आँसू-भरे अभाव में।

शपथ तुम्हें मेरे आँसू की

शपथ तुम्हें मेरे आँसू की
अपने अश्रु मुझे दे देना,
सौंप, पंथ के पैने कंटक,
सुरभित सुमन स्वयं ले लेना।

रात अभी तक जगे अकेली
छुप-छुप रोए सूनेपन में,
बीते दिवस साथ चलते हैं
सजल उदासी लिए नयन में,
मेरी घनीभूत पीड़ा से
कभी तुम्हारा हृदय दुखे ना।

वंदनवार सजे द्वारे पर
कहीं गूँजती जब शहनाई,
घिर आए पलकों पे सावन
घाँवों में उतरे पुरवाई,
जले दीप-सा जीवन मेरा
ऐसा जीवन तुम्हें मिले ना।

विवश हंस यदि मिले अकेला
नदिया तट पर घायल-प्यासा,
अपनी अरुणमयी अँजुरी से
दे देना तुम नीर ज़रा-सा,
मेरे प्राण बहुत तड़पे हैं
प्यासा वो पंछी तड़पे ना।

राही चलता चल

दूर-दूर तक बीहड़ पथ में, फैले नागफनी के जंगल,
पाँव-पाँव हैं, पथ में घायल, राह कहे राही चलता चल।

अंतरमन में शीतल आहें
खुले शीश पर धूप सुलगती,
पग-पग पर पैने शूलों की
प्रखर नुकीली नोकें चुभती।
श्रम सीकर से भीग चुका है, बिंधा-बिंधा काँटों से आँचल।

अंतहीन-अभिशप्त डगर है
कहाँ उगेगा नया सवेरा,
मन भयभीत, करे सन्नाटा
प्राण डस रहा घना अँधेरा,
कौन बँधाए धीर हृदय को, कौन चरण को देगा संबल?

शुष्क कंठ से तपे अधर तक
साँस-साँस में सुलगी ज्वाला,
मिली न मरुथल में निर्झरणी
मिला न शीतल जल का प्याला,
कहीं न आशाओं को दीखा सरस तृप्ति देता गंगाजल।

अंजुरी भर के राख बची है
मेरे पास जले सपनों की,
डसती हैं झूठी सौगंधें
अंतर को, पल-पल अपनों की,
टपक रहा रीते नयनों से, बूँद-बूँद खारा जल निश्छल।

तृष्णा और अतृप्त हो गई

मधुवन-मधुवन के आँचल में, तपते तृषित अधर ले चूमें,
तृष्णा और अतृप्त हो गई, अधर कली के जब-जब चूमें।

मधुवासित मधु मदिर अंक में
बिखरा-बिखरा मधुर पराग,
जाग-जाग उठता अंगों में
अँगड़ाई लेकर अनुराग,
रोम-रोम की सुध-बुध बिसरी, मृदु उन्मादमयी खुशबू में।

कितनी बार हुआ तन घायल
छुपे-अनछुपे बहु शूलों से,
चंचल हृदय हुआ है आहत
खिले-अधखिले मृदु फूलों से,
निरख-निरख उन्मुक्त तितलियाँ, यह कमनीय कामना झूमें।

चिर-परिचित मधुवनी बीथियाँ
मोहित मन को लगीं नवेली,
जिनकी ओर बढ़े चरणों में
जनम-जनम पीड़ाएँ झेलीं,
बिखरे बिंब झाँकते रहते, छलक रहे निश्छल आँसू में,
तृष्णा और अतृप्त हो गई, अधर कली के जब-जब चूमें।

मेरी गागर रीती-रीती

सावन बरसे, भादों बरसे,
नयना बरस रहे निर्झर-से,
ताल-सरोवर सब भर जाते,
मेरी गागर रीती-रीती।

अंकुर-अंकुर आँख खोलते,
घूँघट खोल झाँकती कलियाँ,
मधुप मुग्ध मधु पर मँडराते,
नृत्य करें उन्मुक्त तितलियाँ,
पीता नीर पपीहा प्यासा,
मेरी तृष्णा आँसू पीती।

दिवस भीगते, रजनी भीगे,
भीग रही हैं प्यासी पलकें,
जिन्हें चूमकर कभी तुम्हारी
भीग-भीग जाती थीं अलकें,
नर्म-नर्म कोरों से छलकें
नवयौवन की बातें बीती।

दीवारों से लगी सिमटने
धब्बा-धब्बा छिटकी धूप,
घायल खुशबू ढूँढे घर में
खिला-खिला मधुवंती रूप,
कैसे समझाएँ खुशबू को,
हार गए, हम बाजी जीती।

चलो प्रतीक्षा करें चाँद की

चलो बनाएँ नदियों के तट
बैठ रेत में वही घरौंदे,
और बटोरें शंख-सीपियाँ
भूल निठुर जग का संत्रास।

झुकी-झुकी नम बोझिल पलकें
क्यों तुम आज अकेले रो लीं
उलझी-उलझी गाँठें मन की
सम्मुख आ किसलिए न खोलीं,

चलो ढूँढ लाएँ बीते पल
बाँहों में गलबाहें डाल,
मूक नयन से दे जले फिर
एक-दूसरे को विश्वास।

श्यामल-श्वेत घटाएं उमड़े,
रिमझिम-रिमझिम पड़ें फुहारें,
भीग रहे मादक मौसम में
प्यासे-प्यासे प्राण पुकारें,

चलें भिगोएँ तन-मन तपता
तृप्त करें तपती अभिलाषा,
धुल जाएगी सारी पीड़ा
शीतल होगी सुलगी साँस।

धुँधली-धुँधली साँझ सुरमई
उजला-उजला है आकाश,
मधुर मिलन को मचलें आतुर
दोनों के अतृप्त भुजपाश,

चलो प्रतीक्षा करें चाँद की
महक रहे महुआ के नीचे,
महक उठेगी रजनीगंधा,
चहक उठेगी निशा उदास।

छीन समय ने लीं मुस्कानें
जीवन यह अभिशाप हो गया,
मुग्ध प्रणय का पावन क्षण-क्षण
किसी श्राप से पाप हो गया,

चलो तितलियाँ पकड़ें उड़ती,
बुनें नए सतरंगी सपने,
अधर-अधर पर मुसकाएँगे
खिल अनुराग भरे मधुमास।

12624

नई भोर होने वाली है

अँधियारे हो चले घनेरे
भोर नई होने वाली है,
दूर क्षितिज की धुँधलाहट में
कालरात्रि खोने वाली है।

एक-एक कर बुझते जाते
झिलमिल करते दीपक नभ के,
अंतिम श्वास लगे हैं लेने
सन्नाटे में सघन धुँधलके,
चमक जुगनुओं की जंगल में
शायद अब सोने वाली है।

दिनभर जितना तपे मरुस्थल
रजनी उतनी शीतल निर्मल,
घनी कालिमा के आँचल में
झाँक रही है ऊषा उज्ज्वल,
अवनी-अंबर अंतरिक्ष को
स्वर्णकिरन धोने वाली है।

अगम-अतल सागर लहरों में
डूब-डूब के मिलते मोती,
गहन तिमिर के आलिंगन में
छुपी रहे जीवन की ज्योती,
घनी अमावस काली-काली
दीप-दान देने वाली है।

वह कालरात्रि तो आएगी

जल रही नयन में प्रखर ज्योति
यह साँझ-ढले सो जाएगी,
ये समय हमें समझाता है
वह कालरात्रि तो आएगी।

युग की आवर्त परिधियों में
जनमा हर जीव अकेला है,
सब व्यर्थ प्रलोभन धरती के
आ रही विदा की बेला है।
गौरव-वैभव की स्वर्ण विभा
मृदु सपनों-सी खो जाएगी,
वह कालरात्रि तो आएगी।

तज मानसरोवर की तृष्णा
यह राजहंस उड़ जाएगा,
फिर अंतरिक्ष की लहरों से
उसका नाता जुड़ जाएगा,
यश-अपयश की अवशेष गंध
लहरों में लय हो जाएगी,
वह कालरात्रि तो आएगी।

नभ नीलवर्ण के वातायन
अभिनंदन को खुल जाएँगे,
थक गए पथिक के प्राणों को
आँचल में मेघ सुलाएँगे,
उन्मुक्त क्षितिज में सुखद नींद
हारे पंछी को आएगी,
वह कालरात्रि तो आएगी।

विवश पराजित अभिलाषाएँ

साँझ नयन में लगी झाँकने
विवश पराजित अभिलाषाएँ,
नील गगन तक उड़ने वाले
पंछी के ज्यों पर कट जाएँ।

उलझी अलकें सुलझाने में
बीत गए वासंती मौसम,
धूप उतरती रही प्राण में
छलते रहे नियति क्रम-निर्मम,
पतझर के पियरे पत्रों से
जर्जर अंग-अंग कुम्हलाएँ।

दूर दूर तक पथ मे बिखरे
तप्त दुपहरी के सन्नाटे,
नर्म-नर्म बिस्तर पर चुभते
थके हृदय में पैने काँटे,
शुष्क मरुस्थल के अंचल म
कभी न घिरतीं घनी घटाएँ

अनुरागी अनकही कामना
अंदर-अंदर रो लेती है,
रजनी के सूने पहरों में
पलकें बंद भिगो लेती है,
शुभ्र उजाले की आहट में,
भीग रही, हम दृष्टि छुपाएँ।

वैरागिन बन गई चाँदनी,
स्वप्निल आस रह गई प्यासी,
मूक स्वरों में बातें करती
गहन निशा से सजल उदासी,
धुँधली, झील-भरी पानी से,
डूब मरीं इसमें तृष्णाएँ।

दूर तक सूना गगन है

प्रीति के अनुबंध टूटे, रक्त के संबंध छूटे,
सामने चेहरे सभी के, दूर तक सूना गगन है।

गुनगुनाती भोर वह
चौपाल की संध्या सुहानी,
गाँव की कच्ची हवेली
बन गई बीती कहानी,
छाँव पीपल की घनेरी, खोजता अभिशप्त मन है।

मदभरी अमराइयों का
दर्द प्राणों में जनमता,
रह गए आँसू अकेले
ढूँढती है आँख ममता,
आह, अकुलाए अधर पर, मुग्ध सुधियों की चुभन है।

भीड़ में चलता रहा दिन
ओढ़ अभिनय के मुखौटे,
रोज़ ताज़ा घाव लेकर
द्वार धुँधली साँझ लौटे,
धुंध साँसों में घुली है, पाँव में ज़ख़्मी थकन है।

लक्ष्यहीना ज़िंदगी को
जी रही गुमसुम उदासी,
स्याह सड़कों पर भटकती
शोर पी-पी आस प्यासी,
चाहतों में सुगबुगाता वह अभी तक बालपन है।

प्यासे मेरे होठ जल गए

चूमा मैंने सुमन-सुमन को, प्यासे मेरे होठ जल गए,
मुझसे पहले इन फूलों को, शायद तुमने चूम लिया है।

पंखुड़ियों में तपन भर गई
सुलग रही बहकी साँसों की,
भीनी-भीनी खुशबू आए
तरल तरंगित उच्छ्वासों की,
मधुवन में तेरे आने का, सौरभ ने संदेश दिया है।

इंद्रधनुष घुल गए पवन में,
मचलें मधुपों के आलिंगन,
सकुचाई, अनव्याही कलियाँ
मधुप-मधुप को देती चुंबन,
बौराए मौसम का पल-पल, मैंने युग की भाँति जिया है

धूप सुलगने लगी हृदय में,
पलकों में खिल गई चाँदनी,
ओढ़ सितारों-जड़ी चूनरी,
करे आवरण मिलन-यामिनी,
छलक उठे अंबर से मधु-घट, अवनी ने मधुपान किया है

अनजाना है नदिया का तट

मत मटक पथिक, पनघट-पनघट
मत लहर-लहर से नीर माँग,
अनजाना है नदिया का तट।

अधरों पर आकुल प्यास लिए,
अंतर में हठ विश्वास लिए,
मधुवन-मधुवन, सागर-सागर
बन याचक तुम भटके घट-घट।

गागर-गागर पर आँख लगी,
लख रूप सरस फिर प्यास जगी,
सुलगी-सुलगी अनुरक्त साँस
चंपई पाँव की सुन आहट।

घिर रही घटा तो बरसेगी,
रीते घट को वह भर देगी,
पल-दो-पल को मिट जाएगी
प्राणों की प्यासी अकुलाहट।

विह्वल मन से यूँ मत पुकार,
निष्ठुर, निर्मम हर एक द्वार,
सौभाग्य-सूर्य सुलझाएगा
अँधियारों की यह उलझी लट।

मिले न मुझको सच्चे मोती

दूर-दूर तक ढूँढ़ा मैंने
सागर-तल की गहराई में,
मिले बहुत से शंख-सीपियाँ
मिले न मुझको सच्चे मोती।

लहर-लहर में कोलाहल था
जलचर जल में उछल रहे थे,
एक-दूसरे के जीवन को
सगे-सहोदर निगल रहे थे,
अपने स्वार्थ-भरे चिंतन का
बोझ दिखीं चिंताएँ ढोती।

उलझे-उलझे जीव-जंतु थे
चिकने-चिकने शैवालों में,
आपा-धापी, भाग-दौड़ थी
सागर के रहने वालों में,
अपने-अपने में खोई थी
हर प्राणी की जीवन-ज्योती।

खोज-खोज के रत्नाकर से
मैंने चमके रत्न निकाले,
किंतु सभी पाषाण छली थे
रंग-रूप से छलने वाले,
आहत-आकुल आस रह गई
स्वप्न सँजोती, धीरज खोती।

एक भी विश्वास मेरा

एक भी क्षण जी न पाया
एक भी विश्वास मेरा,
एक बंधन तोड़ते ही
बन गया फिर एक घेरा।

खोजते-फिरते रहे सुख-चैन जग की परिधियों में
प्रश्नचिह्नों-सी लगाए टकटकी प्रतिमान मन के,
मिल न पाई छाँव कोई, पंथ में हारे चरण को
बहुत पछताए नयन में इंद्रधनुषी स्वप्न बुन के,
हो गया पल में अपरिचित
साँझ का अपना बसेरा।

झुरमुटों की ओट लेकर चाँद ने चूमा निशा को
प्राण ने उनको पुकारा, लाख हमने चाह रोकी
शीश धुनते रह गए एकांत-से सहमे निमंत्रण
आह! भर के लौट आई, धुन थके भीगे स्वरों की
रंग कोरे चित्रपट पर
भर गया ऐसे चितेरा।

कामना सिसकी अबोली, शून्य के आलिंगनों में,
बैठ रोए खंडहरों में साँझ को जैसे उदासी,
अश्रु में हमने पिरोया, चाँदनी-सा हास निर्मल,
भावना तिल-तिल जली, जलते दिए की वर्तिका-सी,
रात को दूँ, दोष क्या मैं?
छल गया मुझको सबेरा।

कौन किसका है यहाँ, जो मैं किसी की आस कर लूँ?
दर्द ही श्मशान तक बस साथ देगा ज़िंदगी का,
बाँटने को बाँटता हूँ प्यार सारे विश्व को मैं
किंतु जग में कब हुआ है प्यार से कोई किसी का?
विश्व में मुझको मिला है
अश्रु में डूबा अँधेरा।

नयनों में नीर भरे

काँधे पर शीश धरे,
नयनों में नीर भरे,
ओढ़कर अँधेरों को, दर्द सिसकियाँ लेते।

आहटें सुने किसकी
कौन पास आएगा,
आगंतुक आँखों को
आँसू दे जाएगा,
हम किसे करुण मन से प्रेमपातियाँ देते?

याद क्यों करे कोई?
कौन मीत अपना है,
विश्व एक बंधन है
प्रीति एक सपना है,
सोच-सोच अकुलाए होंठ हिचकियाँ लेते।

चाँद भी अकेला है,
चाँदनी अकेली है,
दोनों की मुग्ध हँसी
अपनों ने ले ली है,
रीते मन-प्राणों से मीत चुटकियाँ लेते।

दुनिया का मेला है

परिचय की सीमाएँ और हो गईं लंबी,
किंतु एक अपनापन आज भी अकेला है,
कहने को साथ-साथ दुनिया का मेला है।

ठहर-ठहर जाते हैं पाँव थके मोड़ों पर,
शायद कोई मंज़िल भोर की किरण दे दे,
थाम ले अभावों के बोझ से थकी बाँहें
हाथ में उजाले के थोड़े से क्षण दे दे,
जीवन अँधियारों के संग बहुत खेला है,
कहने को साथ-साथ दुनिया का मेला है।

डूबने लगा सूरज पंथ की थकन पीकर,
एक भी बहलने को छाँव न नज़र आई,
ताकती रहीं नज़रें भीड़-भरे चौराहे,
देख-देख सन्नाटा मौन आँख भर आई,
चिर-परिचित चेहरे पर सब कुछ सौतेला है,
कहने को साथ-साथ दुनिया का मेला है।

दूर-दूर तक फैली धूप की घनी चादर,
अर्थहीन लगती है कल्पना घने वन की,
शूल सिर्फ़ चुभते तो दर्द खुद सँभल जाता
चोट किस तरह भूलें फूल-से दुखे मन की,
फूलों की चोटों को कब किसने झेला है?
कहने को साथ-साथ दुनिया का मेला है।

एक बूँद हूँ

कहने को मैं एक बूँद हूँ, क्षुद्र बूँद में भरा समुंदर,
अमृत-कलश हृदय में छलके, कालकूट विष बहता अंदर।

निरख पूर्णिमा का मुख उज्ज्वल
उन्मादित हो उठी उमंगें,
नीलगगन तक उछलीं आतुर
मधुर मिलन को तरल तरंगें,
जनम-जनम की प्यास लिए हूँ, तृष्णा साथ रहे जीवन-भर।

आँसू-जैसा जीवन सारा
यह खारापन इसीलिए है,
अग्नि शिखाएँ पीकर मैंने
वसुंधरा को प्राण दिए हैं,
सकल विश्व को, सजल अंक से, अनुपम रत्न दिए शुभ सुंदर।

लहर-लहर में कोलाहल है
तल पर वर्तुल भँवर मचलते,
डूब-डूब जाते हैं जिनमें
अनगिन स्वप्न हृदय में पलते,
मैंने दर्द कहे हैं पल-पल, वसुंधरा से गरज-गरज कर।

कालचक्र के अभिनव अनुभव
आँचल में बिंध रहे कटीले,
इस अनंत नभ की छाया में
चित्र सिमटते गए सजीले,
मेरा रूप-रंग नश्वर है, कौन सृष्टि में रहा अनश्वर।

सौ जनम चाहिए भूलने के लिए

मधुवनी शाम कब की विदा हो गई,
भूल पाए न हम चंपई गंध को,
सौ जनम चाहिए भूलने के लिए
एक क्षण में जुड़े नैन-संबंध को।

अरुणिमा दृष्टि की वह गुलाबी छुअन,
नींद को तितलियों के सपन दे गई,
रात को सौंपकर रिमझिमी रतजगे,
मुस्कुराता हुआ मुग्ध मन ले गई।

रसमसाते अधर याद करते रहे,
कँपकँपाती हुई सुर्ख़ सौगंध को।

जागती भोर से सुरमई साँझ तक,
धूप सहते रहे प्राण जलजात-से,
तन तपाती रहीं साँवली बदलियाँ,
अंग जलते रहे चाँदनी रात से।

छोड़ पाए न हम अनछुई चाहतें,
तोड़ पाए न अनुरक्त अनुबंध को।

गुनगुनाती हुई मुस्कुराती परी
देखते-देखते अजनबी हो गई,
नर्म पलकों में जलते दिए सो गए,
जगमगाती हुई रोशनी खो गई।

वह चली आँसुओं की मचलती नदी
बहु जतन से बँधे तोड़ तटबंध को।

सूनेपन में किसे पुकारूँ

सूनेपन में किसे पुकारूँ?
क्षितिज पर प्रियतम का देश।
मृगमरीचिका ले आई है
मेरे प्राणों को परदेश।

अंतरिक्ष में लय हो जाती
करुण स्वरों की ध्वनित तरंगें,
जगने से पहले सो जाते
दृग के सपने रंग-बिरंगे,
यह संपूर्ण सृष्टि सपनों-सी
क्षणभंगुर क्षण-सा परिवेश।

धूप असीमित, कण-भर छाया,
शब्द हमारे अर्थ पराया,
चंचलपन को पल-पल छलती
सम्मोहन से मोहक माया,
मेघदूत से कैसे भेजूँ
प्राण-पाहुने को संदेश।

खिले-खिले सुरभित प्रसून की
साँझ-ढले झर गई लालिमा,
प्रखर प्रभाकर को ग्रस लेती
गहन निशा की सघन कालिमा,
कालखंड की अमिट सतह पर
चिह्न ध्वंस के अनगिन शेष।

जनम-जनम की अकथ यातना
जीर्ण जरा की दुखद कहानी,
युग-युग से जल रही धरा पर
संघर्षों में सतत जवानी,
कुटिल काल के क्रूर करों में
जकड़े हैं जीवन के केश।

एक झलक पाने को

एक झलक पाने को गुज़रा
राही तेरे द्वार से,
नहीं झाँकते नयन तुम्हारे
अब अधखुली किवार से।

टीस उठी है बिजुरी जैसी
जगी नसों में आग है,
पल-पल प्यासा हृदय जलाए
ये कैसा अनुराग है,
दहकी-दहकी दाह बुझा दे
मनभावन मनुहार से।

मधुवासित सौंदर्य सलोना
सुरभित सुमन सुगंध-सा,
अल्हड़ यौवन चढ़ी नदी-सा
डूबे मन तटबंध-सा,
प्रियतम मुझको पार लगा दे
बाहों के गलहार से।

टेर सुना आकुल अंतर की
आहट सुन लो पाँव की,
मेरे पग लौटा लाती है
डगर तुम्हारे गाँव की,
कितनी बार पुकारूँ तुमको
बोलो करुण पुकार से।

सूने आकाश को

आओ, हम बाँहों में दूरियाँ समेट ले,
अनुरंजित कर डालें सूने आकाश को,
नयनों में नयनों को आज डूब जाने दो
अधरों को अधरों के साथ मुस्कुराने दो।

आओ, हम जीवन में अनुरागी रंग भर
रच डालें होंठों से परिचित इतिहास को,
आओ, हम बाँहों में दूरियाँ समेट ले।
साँसों में साँसों की गंध महक जाने दो
स्वर-स्वर को सुंदरतम गीत गुनगुनाने दो।

आओ, हम यौवन को, यौवन की भाषा दें
महकाएँ आँचल में मादक मधुमास को
आओ, हम बाँहों में दूरियाँ समेट ले।
प्राणों में अंतर की प्रीति सिमट जाने दो,
अकुलाए अंतर की तृष्णा मिट जाने दो।

आओ, हम तन-मन की तृष्णा को तृप्त करें
तृप्त करें अंतर की सुलग रही प्यास को
आओ, हम बाँहों की दूरियाँ समेट ले।

रहे झाँकते खिड़कियों से सितारे

रहे झाँकते खिड़कियों से सितारे,
नयन में नयन डूबते थे हमारे।

सुलगी हुई वो घटाओं की खुशबू
भीगे दहकते अधर रसमसाते,
सोए-जगे छलछलाते सरोवर
नाजुक झुके वह पलक थे लजाते,
लजाए हुए थे खिले अंग सारे
नयन में नयन डूबते थे हमारे।

चमक जुगनुओं की जगी झिलमिलाती
कभी वह लजाती, कभी मुस्कुराती,
उभरती हुई एक हलकी-सी आहट
तपन चुंबनों की लरज सहम जाती
बरसने लगी थी रसीली फुहारें
रहे झाँकते खिड़कियों से सितारे।

झपकने लगी हैं उनीदी निगाहें
जगी रात को नींद आने लगी है,
जादू जगाए हवाओं की ठंडक
थके तृप्त मन को सुलाने लगी है,
कि सोने लगे चाँदनी, चाँद, तारे
रहे झाँकते खिड़कियों से सितारे।

सपनों का संसार माँग लूँ

कितनी बार कहा चाहत ने
तुमसे अपना प्यार माँग लूँ,
सपनों का संसार माँग लूँ।

काँप-काँप के होंठ रह गए
प्यासे स्वर की साँसें टूटीं,
अकुलाए संकल्प रह गए
वीणा की झंकार न फूटी,
कैसे मदमाते यौवन का
शब्दों से शृंगार माँग लूँ।

दूर-दूर से दृग ने चूमा
कजरारे नयनों का काजल,
व्यग्र हो गया विकल हृदय यह
जब-जब तेरी गूँजी पायल,
सरस तृप्ति दे अंतरमन को
तुमसे वह मनुहार माँग लूँ।

सकुचाई चितवन की भाषा
भोली हो तुम जान न पाईं
आलिंगन के आमंत्रण को
नयनों से पहिचान न पाईं
कैसे मैं मन मुग्ध प्रणय का
चाहों का अधिकार माँग लूँ।

लगी नींद आने

उनीदीं हुई रसमसाई थकानें,
पिछला पहर है लगी नींद आने,

लगी डूबने साँस मदहोशियों में,
डूबी हुई रात ख़ामोशियों में,
बिखरती छिटकती लटें गेसूओं की
लजाया हुआ मुख लगी हैं छुपाने,
पिछला पहर है लगी नींद आने।

झपकती–झपकती थकीं सुप्त पलकें,
घने साँवले सो रहे हैं धुँधलके,
बुझे जा रहे झिलमिलाते सितारे
चिरागों की लौ है लगी थरथराने,
उनीदी हुई रसमसाई थकानें।

नई चूड़ियों की खनक खनखनाती,
कभी सो गई तो कभी जाग जाती,
पायल छमाछम छनकती छनकती
थकी चाहतों को लगी फिर जगाने,
पिछला पहर है लगी नींद आने।

तड़पती सजल तृप्ति के स्वर नशीले,
दहकते बदन के थके अंग गीले,
मद्धिम हुई है तपिश धड़कनों की
लजाई हुई सो रहीं दास्तानें,
पिछला पहर है लगी नींद आने।

नाजुक नशीली छुअन

नर्म नाजुक नशीली छुअन है,
बिन छुए आज बेचैन मन है।

साँझ के पंख मैले हुए हैं,
ये अँधेरे रुपहले हुए हैं,
रात करवट लगी है बदलने
छटपटाती हृदय में जलन है।

नयन प्यासे उन्हें ढूँढते हैं,
खुशबूओं से पता पूछते हैं,
यह हवाओं के झोंके सताएँ
मीठी-मीठी रगों में दुखन है।

वह पिघलते पहर याद आए,
बेजुबाँ बेबसी कसमसाए,
हैं निगाहें उनीदीं-उनीदीं
मेरी बाहों में सूना गगन है।

थरथराने लगी लौ शमा की,
नींद में है नज़र आसमाँ की,
बुझ रहे झिलमिलाते सितारे
ग़र्क मदहोशियों में भुवन है,
नर्म नाजुक नशीली छुअन है।

छलके अश्रु पिए हैं मैंने

साँझ घिरी सूनी पलकों पर
छलके अश्रु पिए हैं मैंने,
अपने गीत जिए हैं मैंने।

बरसे रिमझिम सावन भादो,
पल-पल बरसी हैं बरसातें,
शीतल-मंद पवन के झोंके
कोमल विकल हृदय झुलसाते,
हरे-भरे सावन के बदले
प्यासे दर्द लिए है मैंने।

पीड़ाओं को प्रीति सौंप दी,
आहों के अभिलाष दुलारे,
आपातों के आँसू पोंछे,
क्रंदन का स्वर हमें पुकारे,
थके चरण को घनी छाँव के
वट के वृक्ष दिए हैं मैंने।

पतझर भर अपनी झोली में
वासंती हैं मौसम बाँटे,
सुमन-सुमन को मुस्काने दीं,
अपने लिए चुने हैं काँटे,
और जगी चाहत में निशदिन
उधड़े जख़्म सिए हैं मैंने।

सलोनी चितवन

मेरे मन को गीत दे गई
उनकी एक सलोनी चितवन

कभी द्वार पर, कभी डगर पर
नयनों से नयना मिल जाते,
हम दोनों के मौन अधर पर
सुमन गुलाबी फिर खिल जाते,
अंगों में मुस्काते मधुवन

आमंत्रण दे गई सलोनी
पलकें प्यासी झुकते-झुकते,
अपनी आहट से सकुचाते
चरण न सम्मुख क्षण-भर रुकते,
गतिमय हो उठते स्पदन

एक झलक के सम्मोहन में
भूल गए हम अपनी राहें,
स्वप्निल-स्वप्निल प्रहर हो गए
जाग उठीं फिर सोई चाहें,
सुधबुध खोए आतुर यौवन

मेरे मन को गीत दे गई
उनकी एक सलोनी चितवन

किससे रूठूँ किसे मनाऊँ

किससे रूठूँ किसे मनाऊँ,
आलिंगन में किसे सुलाऊँ?

श्वासें जलतीं जले दिया-सी,
मन प्राणों में घुटन धुआँ-सी,
आँसू पीती घनी उदासी,
मैं आँसू का भीगा स्वर हूँ,
गीत प्रणय के कैसे गाऊँ?

स्वप्न हो गई श्यामल अलकें,
आतुर आँखें पल-पल छलकें,
कहीं खो गईं झुकती पलकें,
अधरों से अधरों को छूकर
सुर्ख़ छुअन से किसे जगाऊँ?

भुजपाशों में महकीं रातें,
वासंती वह दिन मुस्काते,
दंश बन गईं ये सौगातें,
पावन उर की सौगंधों को
आज विवशता में झुठलाऊँ।

मैं पीड़ा का राजकुवँर हूँ,
राजमहल का मैं खंडहर हूँ,
अंतहीन अभिशप्त डगर हूँ,
विकल वेदना में जन्मा हूँ,
जगी वेदना में सो जाऊँ।

मैं कवि हूँ तुम मेरी कविता

मैं कवि हूँ तुम मेरी कविता,
सूने मरुथल से जीवन में
कल-कल करती कलरव सरिता।

उर में करुणामय प्रेम भरा,
अधरों से मधुर पराग झरा,
चंपई रूप निखरा-निखरा,
लिपटी रहती श्यामल तन से
द्रुम से लिपटे ज्यों मृदुल लता।

प्राणों की रम्य सुरभि-सुषमा,
साकार सुभग रति की प्रतिमा,
अंतर में कुसुमित दया-क्षमा,
रजनी के भीगे पहरों में
मन में भर देती मादकता।

पथ दर्शाए दृग की ज्योती,
अंतर में चाहत के मोती,
आँचल में तृप्त थकन सोती,
निशि में मृदु शुभ्र चंद्रिका-सी
रोमों में भरती शीतलता।

धूप-छाँव-सी

बँधे हुए हैं प्राणों से कुछ
अनबोले वैरागी पतझर,
और तुम्हारी सुधियाँ मेरे
साथ-साथ है धूप-छाँव-सी।

पथ का साथी सूनापन है,
आँसू और अकेलापन है,
विरहिन-सी उर की धड़कन है,
बीहड़ वन में चलते-चलते
चाह थक गई थके पाँव-सी।

जागी हैं उजियारी रातें,
सिसकी हैं रिमझिम बरसातें,
गुमसुम-सी अनगिन सौगातें,
जली-बुझी वे अभिलाषाएँ
सुलग रहीं सुलगे अलाव-सी।

बंजारों-जैसी भटकन है,
मरुथल-जैसा अंतरमन है,
व्यग्र प्रतीक्षित घर-आँगन है,
चोटिल हो अभिशप्त ज़िंदगी
कसक रही है दुखे घाव-सी।

दूर-दूर तक नयन ढूँढते

दूर-दूर तक नयन ढूँढते
श्यामल शीतल छाँव को,
जीवन-पथ में प्रीति दे गई
भटकन मेरे पाँव को।

सुमन-सुमन की सुरभि खो गई
लौट गए घर से मधुमास,
उजड़ गए मुस्काते मधुवन
पतझर शेष रह गए पास,
भूल न पाती चाहत अब तक
नयनों के उलझाव को।

धूप सुलगती प्रखर शीश पर
सुलगे करुण हृदय में दाह,
शुष्क अधर से ठंडी-ठंडी
फूट रही रह-रह के आह,
सौंप गईं मुझको स्मृतियाँ
सुलगे हुए अलाव को।

आँसू पग के साथ चल रहे
साथ चले सूना आकाश,
कोलाहल में बियावान में
भटक-भटक थक गई तलाश,
मैंने जीवन समझ लिया है
राहों के भटकाव को।

मैंने रोपे थे चंदन वन

मैंने रोपे थे चंदन वन
उगे पंथ में घने बबूल,
पग-पग पर पग घायल करते
बिखरे हुए विषैले शूल।

दूर-दूर तक श्यामल-मोहक
मिले मेघ से शीतल साए,
ऐसा कोई श्राप लगा था
हर साए ने प्राण जलाए,
जीवन को अभिशाप दे गई
भोले मन की चंचल भूल।

पतझर पहने आए मौसम
मेरे हरे-भरे उपवन में,
खंडहर की ख़ामोशी रहती
अंतरमन के शून्य गगन में,
बिंधे हुए आँचल में कंटक
अँजुरी में सपनों की धूल।

पता नहीं कब किस तितली के
पंख सुकोमल नोचे मैंने,
उड़ने से पहले मर जाते
जो मेरे संकल्प सलोने,
अपने आँगन में बोए थे
खिले किसी के घर वे फूल।

पोर-पोर मे रजनीगधा

पोर-पोर में रजनीगंधा
मन में महक रही कस्तूरी,
तृषित हृदय की तृप्त न होती
प्यासी-प्यासी शाम अधूरी।

सम्मोहित सलज्ज सीपी-सा
दृग का मादक अलसायापन,
उच्छ्वासों-सी उष्ण तरलता
शरद चाँदनी-से सम्मोहन,
वासंती हर भोर हो गई
सुरभित साँझ ढली सिंदूरी।

आनन-अरुण तप्त कर जाते
निशा--निमंत्रण के आमंत्रण,
तन-मन में विद्युत भर जाते
मधुरस पीते उन्मादक क्षण,
अंगों में खिलने लगती है
रात जगी, रातें अंगूरी।

बाहुवलय की मृदुल परिधियाँ
जाग रही हैं भुजपाशों में,
लगे दहकने फिर पलाश वन
बहक रही विह्वल साँसों में,

तन को अभिशापित-सी लगती
तन से पल दो पल की दूरी,
पोर-पोर में रजनीगधा
मन में महक रही कस्तूरी।

सुधियाँ भूल नहीं पाई हैं

सुधियाँ भूल नहीं पाई हैं
अधरों पर जनमी सौगंध,
मेरे श्वासों में महकी है
अब तक उनके तन की गंध।

मेहँदी रचे गुलाबी करतल
सुर्ख़-सुर्ख़ सुकुमार अँगुलियाँ,
जिनकी एक छुअन से खिलती
सुप्त हृदय में सुरभित कलियाँ,
मचल-मचल उठते हैं प्यासे
मेरे बाहुवलय के बंध।

काजल-सी अँखिया कजरारी
कोरों पर मुस्काता अंजन,
निरख-निरख अनुरागी चितवन
नील-झील में डूब गया मन,
लाँघी मर्यादा की सीमा
तोड़े थे सौ-सौ प्रतिबंध।

पलकों पर बस गए वियावाँ
विकल हृदय में है कोलाहल,
आँसू पी-पी प्यासी तृष्णा
भटक रही है मरुथल-मरुथल,
रात-रात भर करवट बदलें
मन के साथ बँधे अनुबंध।

अनगिन बार अकेलेपन से
साँझ पूछती पता तुम्हारा,
सूनी-सूनी पगडंडी पर
लगता तुमने हमें पुकारा,
रोक-रोक लेती है पग को
कलियों की अनछुई सुगंध।

अरुण-अरुण अधरों पर अंकित

अरुण-अरुण अधरों पर अंकित
जलते होंगे मेरे चुंबन,
सुधियाँ भूल न पाई होंगी
भुजपाशों के मृदु आलिंगन।

मेरे तन की, तेरे तन की
गंध घुली होगी मौसम में,
मेरे गीत खनकते होंगे
रुनझुन पायल की छम-छम में,
भीगा-भीगा बिखरा होगा
कजरारे नयनों का अंजन।

मेरी प्रीति महकती होगी
उन्मादक हर एक छुअन में,
सुलगे-सुलगे स्वर साँसों के
तड़प रहे होंगे बंधन में,
बरसे होंगे सावन-भादो
सिसका होगा रह-रह के मन।

संध्या दीप जलाते होंगे
थर-थर करते हाथ तुम्हारे,
बोझिल-बोझिल झुकी पलक से
छलके होंगे अश्रु हमारे,
आँसू पी-पी घुटता होगा
विकल-विवश हो मौन समर्पण।

मौन नयनों ने नयन से

मौन नयनों ने नयन से
मूक स्वर में बात कर ली,
प्रीति ने पावन प्रणय की
आज अनुमति प्राप्त कर ली।

हृदय ने समझी हृदय की
अनकही अनुरक्त भाषा,
प्राण प्यासे जानते हैं
प्राण की प्यासी पिपासा,
दृष्टि की नत दृष्टि ने
स्वीकार वह सौगात कर ली।

कामना की आहटें
पहिचानती हैं कामनाएँ,
भावना के आचरण को
जानती है भावनाएँ,
वेदना ने वेदना की
वेदनाएँ ज्ञात कर लीं।

विकल मन की हर विकलता
व्यग्र करती करुण मन को,
प्रियतमा पहिचानती है
प्रेम–परिणय की छुअन को,
रूप से सौंदर्य की
सौंदर्यता श्रीकांत कर ली।

अनुरंजित अरुणिम कपोल पर

अनुरंजित अरुणिम कपोल पर
इंद्रधनुष-सी छाँव खिल गई,
कुसुमित नवयौवन की शायद
नवयौवन से दृष्टि मिल गई।

दिवस हो गए स्वप्निल-स्वप्निल,
व्यग्र प्रतीक्षित आतुर रजनी,
अंग-अंग में धूप वसंती,
पलकों पे खिल गई चाँदनी,
सुप्त हृदय के स्पंदन मे
मनभावन नवज्योति जल गई।

मादक-मादक जगी वेदना
सूनेपन के आलिंगन में,
मधुरिम-मधुरिम मुग्ध कल्पना
सुर्ख़-सुर्ख़ सुकुमार नयन में,
नींद हो गई वैरागिन-सी
सुध-बुध खोई निशा ढल गई।

मोर पंखिया अभिलाषाएँ
श्वेत-श्याम मेघों-सी घिरतीं,
उड़ आँचल के नीलगगन में
पंख लगाए फिरें विचरती,
सबल-सुसज्जित बाहुवलय की
बाहुवलय में आस पल गई।

नील-झील-से नयन-सरोवर

नील-झील-से नयन-सरोवर
आज डूब जाने का मन है,
बहुत पास हो किंतु तुम्हारे
और पास आने का मन है।

सोनजुही की खिली कली-सा
खिला अनछुआ रूप कुँआरा,
स्वप्नमयी आँखों में जागे
सपनों-सा सौंदर्य तुम्हारा,
तेरी एक छुअन को आतुर
आँखों का हर एक सपन है।

नत नयनों की झुकी पलक से
तुमने लजा-लजा के देखा,
मेरे जीवन की उस पल से
एक तुम्हीं हो जीवनरेखा,
पल-पल चाहत पास बुलाए
विरह-वियोगिन हर धड़कन है।

मैंने दर्द कहे रातों से
तड़प-तड़प के तुम्हें पुकारा,
अनुरागी आकुल आहत मन
रातों को जागे बेचारा,
मेरी नींदें हरने वाली
तेरी लाज भरी चितवन है।

राजहंस मैं प्यासा-प्यासा

नयन नीर पीती अभिलाषा
मानसरोवर की लहरों में
राजहंस मैं प्यासा-प्यासा।

पंख बिंधे बहु तीक्ष्ण बाण से
किंतु न फूटी आह प्राण से,
पीड़ाएँ किसको पुकारती
कौन समझता दुख की भाषा।

मुक्त विचरते फिरे भुवन में
उड़े कभी उन्मुक्त गगन में,
मधुर चाँदनी को पीने की
तृषित हृदय में लिए पिपासा।

आहत मन, झरता निर्झर जल
घुला झील में भीगा काजल,
बिखर गया साँसों के स्वर में
हलके-हलके धुआँ-धुआँ-सा।

गाँव तुम्हारे कैसे आऊँ

गाँव तुम्हारे कैसे आऊँ
बोझिल पाँव नहीं बढ़ते हैं
द्वारे तक पहुँचाने वाली पथ-रेखा अंजान हो गई।

थोड़ा-सा सुस्ताने-भर को
माँगी छाया अलकों वाली,
अँजुरी भरकर धूप, दान में
याचक को तुमने दे डाली,
बिखर गए संकल्प धूल में बंदी फिर मुस्कान हो गई।

चाहा था आकुल प्राणों ने
पल दो पल सुख से सो जाना
किंतु भटकती अभिलाषा को
मिला एक बस ठौर विराना
भूल गए थे हम आँसू को फिर उनसे पहिचान हो गई।

परिवेशों में प्यार बाँध लूँ
इसमें मन की मजबूरी है,
जग के झूठे संबंधों से
भली बहुत अपनी दूरी है,
आघातों को सहते-सहते हर पीड़ा आसान हो गई।

मैं चातक-सी प्यास लिए हूँ

तुम सावन की घनी घटा हो,
मैं चातक की प्यास लिए हूँ।

संध्या दीप जलाए घर में
जली ज्योति-सी तृष्णा जलती,
घिरे साँवले अँधियारों में
विकल वियोगिनी पीर पिघलती,
युग-युग से भीगी पलकों पर
मधुर मिलन की आस लिए हूँ।

रात रतजगे लिए अकेली
राह निहारे रीती-रीती,
व्यग्र प्रतीक्षा में नित रजनी
छलके अपने आँसू पीती,
तृषित हृदय में नील गगन-सा
मैं असीम विश्वास लिए हूँ।

बस्ती-बस्ती जंगल-जंगल
सागर-सागर मन भटका है,
पंथ कँटीली पग-पग घायल
प्यासा पंछी नहीं थका है,
अमर प्रेम पर मर मिटने का
प्राणों में इतिहास लिए हूँ।

जले हृदय में आग

जले हृदय में आग
आँख से बरसे पानी
यह कैसी सौग़ात दे गई प्रेम-कहानी।

नयन-नयन के टकराने से
भड़क उठी ऐसी चिंगारी,
दीपशिखा-सी जलती रहती
पल-पल पावन प्रीति हमारी,
स्मृतियों में जाग रही है चाह पुरानी।

दिवस हो गए गुमसुम-गुमसुम
रात-रात भर जगे उदासी,
दृष्टि ताकती गहन शून्य में
अपलक आहत प्यासी-प्यासी,
अल्हड़पन में आँखें कर बैठीं नादानी।

शुभ प्रभात की अंतिम आशा
आँसू को बहलाती रहती,
विरह-वेदना की अकुलाहट
निश-दिन तुम्हें बुलाती रहती,
जग से दर्द नहीं कहता है मन अभिमानी।

जग के रिश्ते

निश-दिन प्यार लुटाने वाले
अपने हमसे रूठे हैं,
समय, हर समय कहता है
जग के रिश्ते झूठे है।

आँखों-आँखों में झाँका तो
दीखा गहरा पानी है,
धूप-छाँव में जीवन चलता
सबकी यही कहानी है,
दर्द छिपा है मुस्कानों मे
सबके सपने टूटे है।

पग-पग पर लक्ष्मणरेखाएँ
अश्रु-अश्रु पर बंधन है,
मूक विवशता के अधरों पर
हँसता रहता क्रंदन है,
हँसने वाले मुक्त मधुर क्षण
जाने किसने लूटे है।

मोहक गीत भ्रमर ने गाया
कलियों ने मकरंद लुटाया,
एक-दूसरे के प्राणों को
सरस तृप्ति दे तृप्त बनाया,
हाँ, अमृत बरसाने वाले
ये संबंध अनूठे है।

तुम मेरे गीतों का स्वर हो

तुम मेरे गीतों का स्वर हो,
साँसों का संगीत अमर हो।

मेरी पागल प्रीति अकिंचन
गाने को तो गा लेती है,
मधुर प्रणय की जगी चाह को
गीतों से बहला लेती है,
किंतु प्राण को तृप्त करे जो
तुम वह नीर भरी गागर हो।

मेरी चाहों के आमंत्रण
मौन स्वरों से देती वाणी,
काश, समझती मनोभाव को
तेरे नयनों की नादानी,
मैं हूँ प्यासा, तप्त मरुस्थल
तुम सरिता की सरस लहर हो।

सोच-सोच के थकी कामना
कैसे मन की पीर बताऊँ,
मौन तोड़ के संकोचों का
आँसू से आवाज लगाऊँ,
रोम-रोम में तपे मधुरिमा
जो अधरों के पास अधर हो।

रिमझिमी फुहारों का मौसम

रिमझिमी फुहारों का मौसम
वह छिप-छिप नयन भिगोएँगे।

मदभरी सुगंधित पुरवाई
नम आँचल लहराती होगी,
जग रही उनींदी पलकों पर
रह-रह बदली छाती होगी,
इस पावस की बौछारों में
दो बिछुड़े प्रेमी रोएँगे।

जगमग-जगमग चमके जुगनू
ज्वालाएँ भड़काते होंगे,
बिजुरी के गर्जन-तर्जन से
वह रह-रह डर जाते होंगे,
सन्नाटों में चुपके-चुपके
वह घाव हृदय के धोएँगे।

अँधियारी रजनी पूछ रही
पूछें उमड़े घन कजरारे,
कब किसने लूट लिए सपने
भर दिए प्राण में अंगारे,
यह प्रश्न सुलगते प्राणों में
उनके भी शूल चुभोएँगे।

नयन निमंत्रण

तुमने मेरे नयन निमंत्रण, पहले क्यों स्वीकार किए थे,
और हाथ में हाथ सौंपकर, इतने क्यों अधिकार दिए थे।

शत-शत स्वर्ग दान कर दूँगी
जो पा जाऊँ चरण तुम्हारे,
अपने साथ मुझे आने दो
मैं अभिशाप सहूँगी सारे,
पथ में संग नहीं आना था, भर क्यों ऐसे वचन लिए थे।

तन-मन सौंप चुकी मैं तुमको
प्राण अगर चाहो ले लेना,
सब जन्मों में बनूँ तुम्हारी
यह अधिकार मुझे दे देना,
चचल मन को भरमाने को, क्यों सोलह शृंगार किए थे।

तू मेरे उर की धड़कन है
मैं तेरे नयनों की ज्योती,
इसी वक्ष पर बिखराए थे
दृग से तूने निर्मल मोती,
शुभ्र चाँदनी के आँचल में, मनभावन मनुहार किए थे।

मैं तो घाव हृदय के दुखते
आँसू पी-पी के भर लूँगा,
औ' रच-रच के अमर गान मैं
जग में तुम्हें अमर कर दूँगा,
स्वयं निबाहूँगा प्रण सारे, जो हमने बहु बार लिए थे।

पग आहट से

मेरे पग-पग की आहट से
उनके पाँव थिरकने लगते,
व्यग्र-प्रतीक्षित जगे नयन मे
हरसिंगार महकने लगते।

अपलक नयन, नयन से मिलते
दृष्टि गुलाबी होने लगती,
मधुर मिलन की मादक चाहत
प्रणय-स्वप्न में खोने लगती,
आतुर दृग की मुग्ध छुअन से
कोमल अंग दहकने लगते।

श्वासों में केशर घुल जाती
मुख पर खिलती भोर वसंती,
अरुण कपोलों पर ऊषा की
अरुणिम आभा मदिर छलकती,
मचल-मचल उर के स्पदन
संयम तोड़ बहकने लगते।

हृदय हृदय में लय हो जाता
तृष्णा बँधती आलिंगन में,
श्वासों में श्वासें खो जातीं
तन खो जाता तपते तन में,
तिमिर तरंगों के आँचल मे
जलते बदन पिघलने लगते।

सावन का दे दिया निमंत्रण

झुके नयन ने विकल नयन को
सावन का दे दिया निमंत्रण
लगे टोकने बढ़े चरण को
धुँधलाए अतीत के दर्पण।

संध्या दीप जले आँगन में
बने सुहागिन रात अँधेरी,
प्राण-पाहुने को सम्मुख पा
बरस पड़ीं ये आँखें मेरी,
बिखर गए गीली पलकों पर
जाने कितने झूठे से प्रण।

सिमट गई निशि के प्रहरों में
कई बरस की लंबी दूरी,
साँसें भूल गईं पल-भर को
पग के साथ बँधी मजबूरी,
बहका यौवन किंतु सिसकने
लगे अचानक सुधियों के क्षण।

मौन समर्पण की ज्वाला में
पिघल गए संकल्प हठीले,
बोले भाव हृदय के पगले
पहले अपने आँसू पी ले,
छलने को तुझको आए हैं
रूप नया धर के आकर्षण।

चलते-चलते किसी मोड़ पर
हम विश्वास स्वयं खो आए,
इसीलिए पथ में लगते हैं
आज पराए अपने साए,
और सुलगता है ये तन-मन
पाकर मादक नयन निमंत्रण।

मेरे गीतों में पढ़ लेना

कैसे तुम बिन जिए अकेले,
मेरे गीतों में पढ़ लेना,
अपने मधुर सुरीले स्वर से
इन्हें सुरीली सरगम देना।

अँधियारे का बोझ उठाए
दूर कहीं दीपक जलता हो,
टूट रही हों लौ की साँसें
झंझावातों से लड़ता हो,
ऐसे जलते विवश दिए को
अपने आँचल से ढक लेना।

पंख कटे हों, पाँव बँधे हों
आहत राजहंस हो प्यासा,
मानसरोवर के पुलिनों पर
डूब रही हो जीवन-आशा,
प्यासे-घायल राजहंस को
शीतल जल से जीवन देना।

झिलमिल करते नीलगगन से
टूट गिरें ज्यों जगमग तारे,
ऐसे ही रजनी में टूटे
आलोकित विश्वास हमारे,
विश्वासों के टूटे धागे
और किसी के तुम बुन देना।

जो तुम पास हमारे होते

जो तुम पास हमारे होते
कितना सुंदर होता जीवन,
एक-दूसरे की बाहों म
खोया रहता यह सूनापन।

नयन-नयन में रहते डूबे
हृदय, हृदय के लिए मचलता,
साँसों में साँसें खो जातीं
चितवन में हँसती चंचलता,

उजियारे की धुँधली आहट
अधरों को अकुलाने लगती,
उजियारों के सो जाने पर
चाहत निशा जगाने लगती,

सुर्ख़ छुअन-सा होता तन-मन,
कितना सुंदर होता जीवन।

करवट लेती आतुरताएँ
जगी उनीदीं इन चाहों में,
इंद्रधनुष के रंग बिखरते
अधरों से फूटी आहों में,

शुभ्र चाँदनी और अमावस
मधुमय सरस मुग्ध हो जाती,
शुभ आनंदित स्वप्नलोक में
सुप्त चेतना फिर खो जाती,

उन्मादित हो तपता आनन,
कितना सुंदर होता जीवन।

कभी रूठते, कभी मनाते,
कभी जगाकर तुम्हें सताते,
तेरे अधरों की मादकता
अपने अधरों से पी जाते,

चाहत जागी तुम्हें जगाती,
मीठी नींद हमें मिल जाती,
थके-थके इन भुजपाशों में
थकी-थकी-सी तुम सो जातीं,

पलकों पर खिल जाते मधुवन
कितना सुंदर होता जीवन।

सुध-बुध खोएँ अभिलाषाएँ
सोती पहरों आलिंगन में,
सौरभमय सुषमा मुसकाती
सुरभित तृप्त सरस जीवन में,

शीतल-मलय पवन के झोंके
तन को और तृषित कर जाते,
लिपटे-लिपटे आलिंगन में
दोनों तृष्णा से भर जाते,

पल-पल प्रणय पिघलता यौवन,
कितना सुंदर होता जीवन।

सुरभि सुगंधित सुभग देह की
बिखराती चहुँ ओर हवाएँ,
उल्लासित हो हृदय थिरकता
निरख-निरख घनश्याम घटाएँ,

थकी-थकन का बहा पसीना
पोंछ भिगोती अपना आँचल,
मेहँदी रची अँगुलियों से छू
बार-बार मन करती चंचल,

तृषित तृप्त हो जाते सावन,
कितना सुंदर होता जीवन।

लंबे-लंबे दिन हो जाते
छोटी-छोटी होती रातें,
चंचलपन की लुका-छिपी में
पल दो पल में दिन खो जाते,

अकुलाहट उन्मादित होती
पा उन्मादक निशा-निमंत्रण,
आतुरता अभिलाषा बनती
आतुर हो जाते क्षण-प्रतिक्षण,

मुग्ध रूप आशा मनभावन
कितना सुंदर होता जीवन।

तुम मेरा सम्बल बन जाती
मैं तेरा होता विश्वास,
घनी निराशा की धुँधलाहट
कभी न होती दृग के पास,

हारी शिथिल उमंगों में फिर
नवल ऊर्जा को भर देतीं,
नूतन मृदु उल्लास जगाकर
दृढ़ संकल्प सजग कर देतीं,

मुस्काता मिल-जुल अपनापन,
कितना सुंदर होता जीवन।

रति-अनंग की क्रीड़ाओं में
डूबे हम दोनों इतराते,
परिणय-प्रीति हमें दे देती
भावी जीवन की सौग़ातें,

रंग-बिरंगे नई भोर के
पास बैठ तुम सपने बुनतीं,
आने वाली हर आहट को
व्यग्र जगी उत्कंठा सुनतीं,

दिवस बितातीं उन्मन-उन्मन,
कितना सुंदर होता जीवन।

दीप जलातीं शुभ्र ज्योति के
ढली साँझ को घर-आँगन में,
द्वारे बैठ प्रतीक्षा करतीं
आस लगाए अरुण नयन में,

दूर-दूर तक दृष्टि विकल हो
आने वाला पथ निहारतीं,
धूल-भरे मेरे चरणों को
घर आ जाने पर दुलारतीं,

पलकों पर खिल जाते मधुवन,
कितना सुंदर होता जीवन।

मदिर सलोने संस्पर्श से
मोहित होती थकन हमारी,
पद पखार के हर्षित होती
मंगलकारी प्रीति तुम्हारी,

मेरे लिए बना लातीं फिर
सोंधी-सोंधी महकी रोटी,
जीवन की हर एक समस्या
लगने लगती हमको छोटी,

घर होता गोकुल वृंदावन,
कितना सुंदर होता जीवन।

किंतु खो गई आस प्रणय की
डूब गईं आँसू में रातें,
अब अवशेष सुलगते मरुथल
जले स्वप्न, प्यासी बरसातें,

रेतीला-सा राजमहल था
खंडहर उसके लुप्त हो गए,
अविरल आँसू के सागर में
तुम डूबीं, हम स्वयं खो गए,

आज अश्रुमय है घर-आगन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

साँस-साँस अभिशप्त अकेली
भटक रही वैरागिन जैसी,
पतझर-जैसी भोर जागती
लगती साँझ अभागिन-जैसी,

भूल गए वासंती मौसम
सरस सुवासित पथ में आना,
भूल गईं इतराती खुशियाँ
अधरों पर आकर मुस्काना,

गुमसुम-गुमसुम है चंचलपन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

करूँ भला आशाएँ कैसी
बँधी चरण के साथ विवशता,
जोड़ लिया जलते प्राणों ने
सुलगी हुई जलन से रिश्ता,

आँख जागती कोलाहल में
पहले छलके आँसू पीती,
रात-रात-भर जागी रातें
जग से कहतीं आँखें रीती,

बहलाऊँ कैसे मैं यौवन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

गीत न जगते अब होठों पर
वीणा की झंकार न भाती,
प्राणों में घिर गई उदासी
आँसू भरी घटाएँ लाती,

मैं हूँ और अकेलापन है
बाहर भीतर सूनापन है,
दर्पण पूछे धुले नयन से
मुखड़े पर क्यों धुँधलापन है,

कहाँ गए हँसते सम्मोहन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

स्मृतियों में महकी रहती
मंद स्वरों की मीठी आहट,
थम-थम के आवाजें देती,
चुपके-चुपके से अकुलाहट,

दिन तो कटता भाग-दौड़ में
राहें चरणों से जुड़ जातीं,
अभिशापित यह थकी ज़िंदगी
कहीं न सुख की छाया पाती,

खोया-खोया है उदास मन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

कैसे पास तुम्हारे आऊँ
कैसे तुमको पास बुलाऊँ,
अपयश-दंश तुम्हें डस लेंगे
सोच-सोच के मैं डर जाऊँ,

मूक विवशता मौन दृष्टि में
बढ़ते चरण स्वयं रुक जाएँ
बाँध लिया करती चरणों का
मर्यादा की बहु रेखाएँ,

मर्यादा ने बाँधे बंधन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

उभर रहे प्रतिबिंब विहँसते
भूल न पाते मुस्कानों को,
सजल हँसी में ढक लेते हैं
मन में बिखरे वीरानों को,

प्रश्न पूछने लगते मुझसे
झुरमुट के वे शीतल साए,
बैठ जहाँ पर मैंने-तुमने
सुख-दुख के पल साथ बिताए,

अब तक उनमें है अपनापन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

हम दोनों को मिली सजाएँ
पता नहीं किस गहन पाप की,
फिरे भटकते बंजारों-से
पीड़ा लेकर लगे शाप की,

आरोपित हो गई विवशता
घाव सुलगते फिर जग जाते,
स्मृतियों में बीते मौसम
वापस आकर शूल चुभाते,

बहने लगते शुष्क सुलोचन
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

दूर पराए घर-आँगन में
जब-जब रजनीगंधा महकी,
साँझ सिसकने लगी पलक पर
विह्वल उर की धड़कन बहकी,

मलय समीरण के झोंकों से
जाग उठी अभिलाषा सोई,
सूनेपन में बाँह पकड़कर
फूट-फूट हर आशा रोई,

चाह छलकने लगी अश्रु बन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

कभी कहा था तुमने मुझसे
तुम मेरी श्वासों के स्वर हो,
मिट न सके जो हृदय-पटल से
ऐसे सुंदर चित्र अमर हो,

मैं धरती-सी तुम्हें निहारूँ
तुम मेरे निस्सीम गगन हो,
मन-प्राणों के स्वामी हो तुम
मेरे प्रिय, मेरी धड़कन हो,

सुन-सुन तृषित हुए आलिंगन,
कितना सुंदर था वह जीवन।

तुम चंदा, मैं सुभग चाँदनी
सूरज तुम, मैं धूप तुम्हारी,
सदा-सर्वदा साथ रहूँगी
मैं तेरी छाया सुकुमारी,

अपनी कहते, अपनी सुनते
खट्टे-मीठे स्वप्न सजाते,
समय सलोना खो जाता था
झिलमिल तारे समय बताते,

अलकों-बीच विहँसती चितवन,
कितना सुंदर था वह जीवन।

गई न अब तक गंध देह की
रची-बसी वह छवि अलसाई,
रोम-रोम में जाग रही है
आमंत्रित करती अँगड़ाई,

झुकी-झुकी पलकों की चितवन
बिन बोले कुछ कह देती थी,
और हमारी आँख अबोली
चाह तुम्हारी पढ़ लेती थी,

खनक-खनक उठते थे कंगन,
कितना सुंदर था वह जीवन।

मदिर पवन के मादक झोंके
आँचल को सरका देते थे,
हम अपने हाथों से आँचल
फिर से तुम्हें उढ़ा देते थे,

पोर पोर में रजनीगंधा
खिलती हुई दमक उठती थी,
नर्म पाँव की रुनझुन पायल
अपने-आप खनक उठती थी,

पलकों पर खिल उठते मधुवन,
कितना सुंदर था वह जीवन।

मृदु कपोल अनुरंजित होते
अधरों के भीगे चुंबन से,
विद्युतकण झरने लगते थे
मुखड़े पर बस एक छुअन से,

उन्मादक हो जाता मौसम
सिहर पवन थी हुई नशीली,
आस-पास बिखरे कुंजों ने
झूम-झूम के मदिरा पी ली,

सुलग रहे थे जग उद्दीपन,
कितना सुंदर था वह जीवन।

लचक-लचक जाता बाँहों में
नर्म शाख-सा बदन लचीला,
मधुर प्रणय के मादक क्षण में
छुई-मुई-सा रूप सजीला,

डूब गए हम स्वप्नलोक में
तिर आए वासंती मौसम,
भोलेपन की सहज सरलता
समझ न पाई आँखों का भ्रम,

गूंज रहा प्रिय का संबोधन
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

जुगनू-सी आलोकित चाहत
जान न पाती रंग समय के,
मधुर कल्पना की अधीरता
नित्य छेड़ती भाव हृदय के,

लाँघ न पाईं तुम सीमाएँ
चरण न पहुँचे द्वार तुम्हारे,
साथ रहे पर चले अकेले
दूर-दूर ज्यों नदी किनारे,

मर्यादा के हैं दृढ़ बंधन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

आने को तो आ जाते हैं
पहले जैसे साँझ-सकारे,
किंतु समय ने छीन लिए हैं
हम दोनों के दृग उजियारे,

कौन बाँटता दर्द किसी का
मिली न कोई छाँव घनेरी,
भीगी-भीगी आँख देखकर
सकल विश्व ने आँखें फेरीं,

पल-पल लगता हमें अपावन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

सुलगे मन घुट रहा धुआ है
दहक रहे दुख जली जलन से,
अब तक महक रही है खुशबू
तेरे तन की, मेरे तन से,

धुँधले चित्र उभरने लगते
थकी उनींदी धुँधलाहट में,
अलसाई मादक अँगड़ाई
मचल उठी फिर दृग के पट में,

शुभ संकल्प भर गए पावन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

कभी-कभी भीगी पलकों पर
जगमग जुगनू जगने लगते,
धीमी-धीमी पग आहट सुन
शीतल होते घाव सुलगते,

ऐसा लगता दबे पाँव फिर
अँधियारे में तुम आई हो,
बीते दिन की विरह-वेदना
प्राणों में भरकर लाई हो,

महक उठा फिर सूना आँगन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

सहमी-सहमी, सिकुड़ी-सिकुड़ी
सजग सशंकित ठहर लजीली,
झिझक-झिझक के आगे बढ़ती
आँख झुकाए सुर्ख़ नशीली,

बाहुवलय में, अंकपाश में
आने से पहले इतराती,
इधर देखती, उधर देखती
अपनी आहट से घबराती,

अंग-अंग में सिहरे कंपन,
मादक था कितना सूनापन।

साँसों में लय होतीं साँसें
लरज-लरज के तुम खो जातीं,
रोम-रोम में जगी बिजलियाँ
शबनम से शोला हो जातीं,

दहके-दहके चुंबन आतुर
अधरों पर हो जाते अंकित,
मदहोशी में डूबी चितवन
सुध-बुध खोकर होती अर्पित,

उन्मादित हो उठती धड़कन,
मादक था कितना सूनापन।

कभी-कभी आकर समीप तुम
अंतरमन की पीर बतातीं,
कैसे व्यग्र प्रतीक्षित थे पल
मुझसे सुनतीं, मुझे सुनातीं,

बार-बार नयना भर लातीं
अलकों में छिप जाती आँखें,
बिछुड़न की पीड़ा कह देती
भोली-भोली भीगी आँखें,

कैसी विकल विरह का बिछुरन,
आकुल था कितना सूनापन।

धर कर हाथ शीश पर मेरा
प्राणों की सौगंध खिलातीं,
विह्वलताएँ फिर अधीर हो
स्वयं सिसकतीं, मुझे रुलातीं,

अश्रु पोंछ मैं तुम्हें चुपाता
करुण भावना को बहलाता,
तेरे आहत दुखे हृदय को
अपने आँसू से सहलाता,

हर्षित था कितना अपनापन,
मधुरिम-मधुरिम था सूनापन।

अपनी कहतीं, अपनी सुनतीं
कहते-कहते बँधती हिचकी,
घटा बरसती, खुल जाती थी
थम जाती थी रोई सिसकी,

वही कल्पना, वही भावना
लौट-लौट आने लगती है,
खुले-खुले-से नीलगगन पर
बदली फिर छाने लगती है,

पलकों पर उतरे गीलापन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

कभी कभी तो लगने लगता
किसी मोड़ पर जैसे तुम हो
पर किसी गीत का धुन में
या अपने सपनों में गुम हो,

बात पुरानी दुहराने को
नया ढंग तुम सोच रही हो,
भोली आशाओं को लगता
आस-पास तुम यहीं कहीं हो,

याद आ रही चंचल चितवन,
पलकों पर उतरे गीलापन।

करवट बदल रही रातों को
आकर तुम नींदें दे जाओ,
सौंप गईं जो हमें रतजगे
वापस आकर इन्हें सुलाओ,

जागी-जागी आँख उनींदी
थकी-थकी-सी सो जाती हैं,
सोते-सोते जागी चाहत
फिर सपनों में खो जाती हैं,

दर्द भूल बैठा भोलापन,
पलकों पर उतरे गीलापन।

इन दरवाज़ों पर खुशबू है
मेरी-तेरी सौगंधों की,
इन दीवारों पर अंकित है
छाया अनगिन अनुबंधों की,

मेरा हाथ, हाथ मे लेकर
देखी तुमने अपनी रेखा,
जीवन साथ-साथ जीने का
हम दोनों ने सपना देखा,

मन जाती थी रूठी अनबन,
कितना सुंदर था वह जीवन।

दोपहरी की धूप चिटकती
आस-पास बिखरा सन्नाटा,
तुमको पास बुला लाता था
या मुझको आवाज़ लगाता,

कितनी बार जले थे नंगे
नर्म चंपई पाँव तुम्हारे,
पड़े फफोले उन पाँवों के
बोलो, कैसे हृदय विसारे,

परम धाम वह चरण सुपावन,
भीग उठे हैं मेरे लोचन।

कभी अचानक विह्वल होकर
मोती-से आँसू टपकाए,
मैंने वे अपनी पलकों से
जाने कितनी बार उठाए,

सूनेपन की बाँह थामकर
फूट-फूट अभिलाषा रोई,
आँखों ने, आँखों में जागी
रातों को आशाएँ खोईं,

पोछा था वह बिखरा अंजन,
भीग उठे हैं मेरे लोचन।

कोहराई रातों की ठिठुरन
शिशिर शीत की वह शीतलता,
तन से तन की गर्माहट ले
दोनों का था प्रणय पिघलता,

धूप गुनगुनी उतरी छत पर
नयन-नयन से बातें करते,
दीवारों पर हम दोनों के
प्रतिबिंबित प्रतिबिंब उभरते,

कितनी मीठी थी वह ठिठुरन,
कितना सुंदर था वह जीवन।

सूख रहे हैं प्यासे गमले
झरी हुई सूखी पंखुड़ियाँ,
जिनको तुम पानी देती थीं
मुरझाई हैं प्यासी कलियाँ,

पियराए सब शुष्क पत्र ये
देखो आ, कितने उदास हैं,
इनके रूप-रंग की आभा
लगता तेरे आस-पास है,

बेलें फैलीं लगें वियोगिन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

पीतवण पुस्तक क पन्ने
इन पर अपना नाम लिखा था,
शब्द चुने थे मोती जैसे
पहला पत्र यहीं रक्खा था,

नर्म अँगुलियों की पृष्ठों से
झाँक रही रह-रह के चाहत,
अब तो इन पर धूल जम गई
पर आती है कल की आहट,

रोमांचित यह सोच विकल मन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

धुँधले चित्र उभरने लगते
आस-पास की धुँधलाहट में,
अलसाई मादक अँगड़ाई
जाग उठी फिर से दृग-पट में,

काश, कभी मिल बैठें हम-तुम
अपनी-अपनी कहें कहानी,
एक-दूसरे की आँखों का
पी लें, हम आँखों से पानी,

तुम्हें बुलाए विरहिन धड़कन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

रोका होगा बढ़े चरण को
संबंधों के दृढ़ बंधन ने,
बाँह गही होगी वचनों ने
अनुबंधित अधरों के प्रण ने,

याद तुम्हे भी आइ होगी
आकुल-आतुर भुजपाशों की,
प्राणों में जनमे हर प्रण की
साथ जगी, सोई साँसों की,

बरसे होंगे दृग से सावन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

डूबी होगी सहमी सिसकी
वेद मंत्र के उच्चारण में,
किंतु हिचकियाँ रोती होंगी
सन्नाटे के जागे क्षण में,

बिखरे-बिखरे संकल्पों की
धूँ-धूँ होंगी जली चिताएँ,
राख बची होगी आँचल में
जली-बुझी बहु आकुलताएँ,

अंग-अंग में होगा कंपन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

मूक विवशता जकड़ी होगी
परंपरा के प्रतिबंधों ने,
फिर भी चरण बढ़ाए होंगे
मजबूरी के संबंधो ने।

हाँ तुमने आँसू को पीकर
तन का बोझ उठाया होगा,
भीगी-भीगी मुस्कानों को
होकर विवश सजाया होगा,

बिलखा होगा मौन समर्पण,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

सात बार वेदी पर कैसे
घूमें होंगे चरण तुम्हारे,
पग-पग पर जल जाते होंगे
सुर्ख़ चंपई पग बेचारे,

उभर रहे परिदृश्य दृष्टि में
सपनों-से पल लगते कल के,
नयन बसे हैं, सजल नयन में
धुले-धुले भीगे काजल के,

विह्वल होगी कितनी चितवन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

आस-पास आ बैठी होंगी
मादक मौसम की स्मृतियाँ,
मुझे भुलाने के प्रयास में
चुभती होंगी रह-रह सुधियाँ,

काँप-काँप रह जाता होगा
मेहँदी-रचे करो का कंपन,
अंग कर रहे होंगे अभिनय
मन होगा द्विविधा में उन्मन,

उग आए होंगे कंटक वन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

अर्थहीन उपवास हुए सब
व्यर्थ हुई हर एक प्रार्थना
विधि ने दुख के ही धागों से
की होगी बिछुरन की रचना,

शीश झुकाया हर मंदिर में
नतमस्तक हो देव मनाए,
भाग्यविधाता के चरणों में
निशदिन हमने सुमन चढ़ाए,

नित्य किया था संध्या-वंदन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

दीप जलाए, करी आरती
एक-दूसरे को था माँगा,
बाँध न पाई करुण वंदना
जुड़ते संबंधों का धागा,

जीत गईं युग-परंपराएँ
हुई पराजित प्रीत हमारी,
हार गए संकल्प हमारे
पूजा हार गई बेचारी,

व्यर्थ हो गए वंदन-पूजन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

साँझ सुरमई धुआँ-धुआँ-सी
रात-रात-भर जागी रातें,
सुधियाँ सौंप गईं जीवन को
आँसू की अविरल बरसातें,

शीतल नेह लुटाने वाली
बदन जलाने लगी चाँदनी,
ओढ़ अँधेरे अश्रु बहाए
भीगी छत पर सजल यामिनी,

अंतरमन में चले प्रभंजन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

मरुथल-मरुथल मृगछौनों-सी
भटक रही प्यासी तृष्णाएँ,
मेरे-तेरे बढ़े चरण को
दी हैं राहों ने पीड़ाएँ,

पता पूछती जब पगडंडी
कभी तुम्हारे नगर गाँव का,
दर्द जागने लगता उर में
सोए-सोए दग्ध घाव का,

भटकी बहुत सिसकती भटकन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

दर्द दे गई हर प्रत्याशा
रोई रातों में अभिलाषा,
जली ज्योति से आग लग गई
हृदय हो गया धुँआ-धुँआ-सा,

पतझर साथ-साथ चलते हैं
सुमन-सुमन की गंध खो गई,
आँसू पीती उत्कंठाएँ
अर्थहीन सौगंध हो गईं,

अनुभव हैं कुछ बचे अकिंचन
छिप-छिप आसू पीता जीवन।

मिलें हमें सब सघन अँधेरे
मिलें रेशमी तुम्हें उजाले,
स्वर्ग-सरीखे सारे मौसम
द्वार तुम्हारे डेरा डाले,

झिलमिल करते चाँद-सितारे
तेरे आँचल में भर जाएँ,
मधुर मिलन के मुग्ध क्षणों में
मेरी यादें तुम्हें न आएँ,

कभी न छलकें अश्रु अकिंचन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

कभी न पथ की धूप जलाए
सुरभित-सुरभित सुख-सपनों को,
सूरज प्रखर उजाला बाँटे
तुमको औ' तेरे अपनों को,

रूप, श्री, वैभव की वर्षा
समय सलोने कर से कर दे,
जगने वाली भोर सुहानी
हँसते दिन झोली में भर दे,

सारी सृष्टि करे अभिनंदन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।

अभिशापों के दंश चुभें तो
उनकी चुभन मुझे दे देना,
संतापों का ताप सताए
उसकी जलन मुझे दे देना,

कभी न झंझावात तुम्हारे
मधुवन की मुस्कानें हर लें,
मुझे रुलाएँ, मुझे सताएँ
सुख के स्वप्न हमारे कुचलें,

तुम्हें डसें ना दुख के बंधन,
छिप-छिप आँसू पीता जीवन।